KENNETH ANDERSON

THE BLACK PANTHER OF SIVANIPALLI

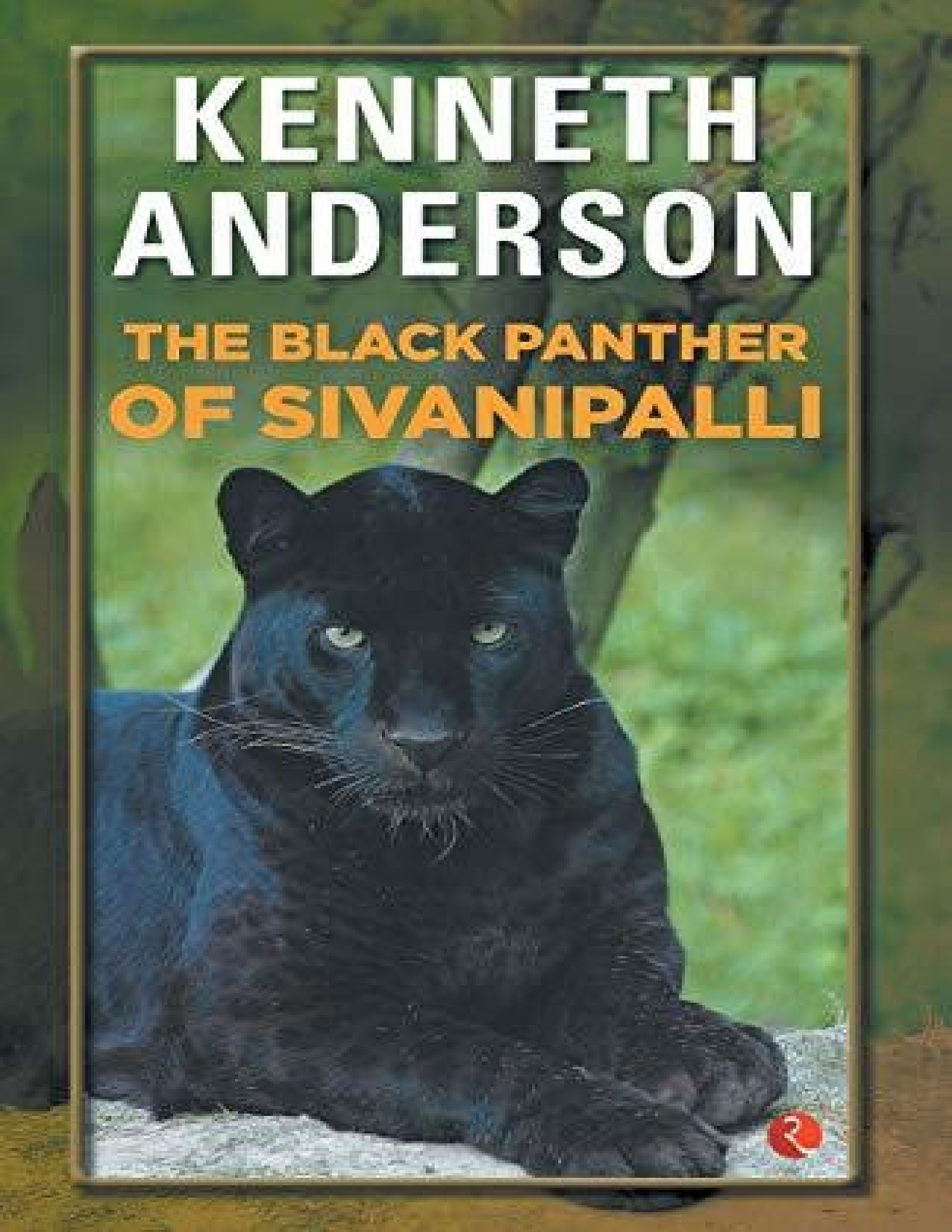

Table of Contents

[□□□□□□ □□□](#)
[□□□□□□□□ □□□□□](#)
[□□□□□□□□□□](#)
[□□□□□](#)
[□□ □□□□□ □□ □□□□□□](#)
[□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□](#)
[□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□](#)
[□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□](#)
[□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□](#)
[□□□□□□□□ □□ □□□□□□□](#)
[□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□](#)
[□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□](#)
[□□□□□□□□ □□ □□□□□□](#)

Rupa & Co

पांचवां संस्करण 2011
द्वारा प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 7/16, Ansari Road, Daryaganj,
नई दिल्ली 110 002
सर्वाधिकार सुरक्षित।
इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है। टाइपसेटिंग का कॉपीराइट © रूपा एंड कंपनी 2001 टाइपसेट द्वारा
माइंडवेज़ डिज़ाइन
1410 चिरंजीव टावर
43 नेहरू प्लेस
नई दिल्ली 110 019

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

परिचय
इस पुस्तक के पहले पाँच अध्याय पैंथरों को समर्पित हैं। शायद आप सोच रहे होंगे कि मैंने पैंथरों पर ही ध्यान क्यों केंद्रित किया है और जंगल के अन्य जानवरों के बारे में क्यों नहीं लिखा। इसका एक कारण यह है कि पैंथर आज भी भारत में काफी आम हैं। दूसरा, इन्हें ढूंढना अपेक्षाकृत आसान है, क्योंकि आज भी ये कुछ बड़े शहरों से कुछ मील की दूरी पर ही मिल जाते हैं। तीसरा कारण यह है कि पैंथरों का शिकार काफी सस्ता है और आम आदमी की जेब के बजट में है। पैंथर कुत्ते, बकरी या गधे जैसे चारे पर आ जाते हैं; जबकि बाघ को भैंस या बैल से आकर्षित करना पड़ता है, जिसमें काफी खर्च आता है।
इसके बदले में, पेड़ की मचान की सुरक्षा में बैठकर शिकार करने के बजाय जमीन पर बैठकर खेल भावना से पैंथर का शिकार करना बाघ के शिकार जितना ही रोमांचकारी अनुभव प्रदान करता है।
मैंने बाघों और अन्य जानवरों के बारे में एक अध्याय लिखा है, और साँपों के बारे में भी कुछ लिखा है। मैंने साँपों को इसलिए शामिल किया है क्योंकि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में बाघों, हाथियों, शेरों और बड़े जानवरों के बारे में बहुत कुछ लिखा और जाना जाता है, लेकिन साँपों के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं लिखा गया है, और ज़्यादातर लोग उनके बारे में बहुत कम जानते हैं, सिवाय इसके कि आम तौर पर उनसे बचना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि मैं इन समान रूप से रोचक जीवों पर कुछ प्रकाश डाल सकूँगा। पाठक को एक पल के लिए भी यह नहीं सोचना चाहिए कि बाघ, तेंदुआ, भालू और हाथी भारतीय जंगल में मिलने वाले सबसे खतरनाक जीव हैं। झाड़ियों या घास में घात लगाए बैठा ज़हरीला साँप कहीं ज़्यादा तेज़, कहीं कम दिखाई देने वाला और कहीं ज़्यादा शक्तिशाली होता है।
मैंने एक बहादुर बाइसन की कहानी और बाघों के साथ दो रोमांचक अनुभवों के बारे में भी बताया है। इन दोनों कहानियों से आपको आदमखोर बाघ का शिकार करने में आने वाली कठिनाइयों, परेशानियों और निराशाओं का अंदाजा लग जाएगा। एक मामले में मैं पूरी तरह असफल रहा; दूसरे में मुझे सफलता मिली, लेकिन महज़ संयोग से। मैंने एक ऐसे बाघ के संक्षिप्त वर्णन के साथ अपनी बात समाप्त की है जिसका व्यवहार बहुत ही विचित्र था। जब मैं यह लिख रहा हूँ तब वह जीवित है—और वह अब भी एक रहस्य बना हुआ है।
जैसे-जैसे मैं इन रोमांचक अनुभवों को लिखता हूँ, वर्तमान के दृश्य और ध्वनियाँ धुंधली होती जाती हैं और यादें उमड़ पड़ती हैं। जंगल की रात का अंधेरा, ऊपर तारों से भरा आकाश और नीचे जंगल की चादर पर टिमटिमाते रत्न, घने पत्तों के बीच अनगिनत जुगनू जो परी जैसे दीपक की तरह चमकते हैं; और वे अन्य, अधिक चमकदार, जीवंत प्रकाश, बाघ, तेंदुआ या बाइसन की चमकती आँखें, और झाड़ियों के बीच से धीरे-धीरे चलते हुए सुंदर हिरण की हरी आँखें, जो सरसराते पेड़ों के नीचे चलते समय मेरी टॉर्च की रोशनी को प्रतिबिंबित करती हैं।
आइए, मेरे साथ उन कुछ घंटों के लिए, जो इस पुस्तक को पढ़ने में आपको लग सकते हैं, बाघ, तेंदुआ और हाथी के क्षेत्र में, विशाल वृक्षों की बुलंदियों और घनी छाया के बीच, जिनके तने इस अद्भुत इमारत की संरचना करते हैं। तथाकथित सभ्यता के झूठे मूल्यों और विचारों को भूल जाइए, जीवन की स्वतंत्र और सरल सच्चाइयों पर थोपे गए उन नियमों को भूल जाइए। यहाँ जंगल में आपको सत्य मिलेगा, आपको शांति, आनंद और खुशी मिलेगी; आपको जीवन ही मिलेगा। यहाँ

पाखंड, बनावटीपन, कृत्रिमता और झूठेपन के लिए कोई जगह नहीं है, कोई समय नहीं है। आप आदिम स्वरूप के आमने-सामने हैं, उस वास्तविकता के सामने हैं, उस अद्भुत चीज़ के सामने हैं - जो ईश्वर है।
यदि मैं आपको कुछ क्षणों के लिए आपके जीवन की सभी नीरसताओं से दूर ले जाकर, उष्णकटिबंधीय जंगल के चमत्कारों और उसके रोमांच में ले जाने में सफल हो जाऊं, जहां आपका जीवन आपकी इंद्रियों, आपकी बुद्धि, आपके कौशल और अंत में ईश्वर की कृपा पर निर्भर करता है, जब आप घने हरे-भरे जंगलों या पत्थरों के ढेर के बीच एक घायल आदमखोर के खून के निशान का पीछा करते हैं, तो मैं स्वयं को भरपूर पुरस्कृत महसूस करूंगा।

एक

एक पैंथर का रास्ता हर तेंदुआ दूसरे तेंदुआ से अलग होता है। कुछ तेंदुआ बेहद साहसी होते हैं; कुछ बेहद डरपोक। कुछ बेहद चालाक होते हैं; कुछ बिल्कुल मूर्ख प्रतीत होते हैं। मैंने ऐसे तेंदुओं को भी देखा है जिनमें मानो छठी इंद्री होती है, और वे ऐसे व्यवहार करते हैं मानो किसी के मन की हर बात को पढ़ और समझ सकते हों। अंत में, लेकिन बहुत कम ही, ऐसे तेंदुआ भी होते हैं जो मनुष्यों पर हमला करते हैं, और उससे भी कम, ऐसे तेंदुआ जो उन्हें खा जाते हैं।
आम तौर पर, आदमखोर जानवर किसी असाधारण परिस्थिति का परिणाम होते हैं। हो सकता है कि किसी ने उसे घायल कर दिया हो, और उसके बाद वह आसानी से अपने प्राकृतिक शिकार—अन्य जानवरों—का शिकार करने में असमर्थ हो गया हो। इसलिए, मजबूरीवश वह मनुष्यों को खाने लगता है, क्योंकि वे उसके लिए आसान शिकार होते हैं। या शायद किसी पैंथर ने किसी मृत मानव शरीर को खा लिया हो, जिसे पहले बहुत उथली कब्र में दफनाया गया था और बाद में सियार या भालू ने खोदकर निकाल लिया था। मानव मांस का स्वाद चखने के बाद, पैंथर को अक्सर इसकी आदत पड़ जाती है। अंत में, हालांकि यह बहुत ही दुर्लभ है, हो सकता है कि यह किसी आदमखोर माँ का बच्चा हो, जिसने उसे यह आदत सिखाई हो।
आम तौर पर पैंथर एक शांत और काफी हानिरहित जानवर होता है जो मनुष्यों से डरता है और उन्हें देखते या उनकी आवाज सुनते ही चुपचाप झाड़ियों में गायब हो जाता है। घायल होने पर, कुछ पैंथर असाधारण क्रूरता और बहादुरी दिखाते हैं। वहीं दूसरी ओर, कुछ बेहद कायर होते हैं और अपने पीछे आने देते हैं, या कुत्तों की तरह उनका पीछा भी करते हैं।
अगर आप किसी पहाड़ी की चोटी से किसी पैंथर को अपने शिकार का पीछा करते हुए देख पाते, तो यह एक बेहद मनोरंजक नज़ारा होता। आप उसे हर झाड़ी, हर पेड़ के तने और हर पत्थर के पीछे छिपते हुए देखते। वह खुद को ज़मीन पर इस तरह से समेट सकता है कि वह दिखाई ही न दे, जब तक कि आपकी नज़रें बहुत तेज़ न हों। एक बार मैंने दूरबीन से एक पैंथर को देखा और जंगल में उसकी अद्भुत कुशलता देखकर दंग रह गया। फिर आती है उसकी आखिरी छलांग। कुछ ही छलांगों में, बिजली की तेज़ी से, वह अपने शिकार तक पहुँच जाता है।
अचूक निशाने के साथ, वह अपने शक्तिशाली नुकीले दांतों से ऊपर और पीछे से जानवर का गला पकड़ लेता है, ताकि जब जानवर ज़मीन पर गिरे तो पैंथर उसके खुरों से दूर, दूसरी तरफ रहे, जिससे गंभीर चोट लग सकती है। शिकार ज़मीन पर गिर जाता है और उसकी पकड़ तब तक ढीली नहीं पड़ती जब तक जानवर मर नहीं जाता। मरने के बाद भी, पैंथर अपने शिकार के गले में किए गए गहरे घावों से उसका खून चूसता रहता है।
ज़रा कल्पना कीजिए जंगल की खामोशी और चुपके से आते हुए पैंथर की, जो अपने शिकार की ओर बढ़ रहा है या उसके लिए बांधे गए जीवित शिकार का पीछा कर रहा है। अगर आप पैंथर का शिकार करना चाहते हैं, तो बहुत ध्यान से देखें: हर झाड़ी में झाँकें, घास के हर गुच्छे में देखें, किसी चट्टान या पत्थर के पास से गुजरते समय सावधान रहें, गड्ढों और खाइयों में भी गौर करें। क्योंकि पैंथर इनमें से किसी के भी पीछे हो सकता है, या ज़मीन में किसी गड्ढे में छिपा हो सकता है। न केवल आपकी सफलता, बल्कि आपका जीवन भी आपकी सावधानी पर निर्भर करेगा, क्योंकि आप जंगल के सबसे कुशल जीव और एक बेहद खतरनाक शिकारी के खिलाफ अपनी बुद्धि का इस्तेमाल कर रहे हैं।

जाएं, तो आप समझ जाएंगे कि आपको पैंथर का एक जाना-माना रास्ता मिल गया है। ऐसी जगह चुनें जहाँ दो या दो से अधिक ऐसे रास्ते मिलते या एक-दूसरे को काटते हों, या ऐसी जगह जहाँ ऐसा कोई रास्ता या आग की लकीर किसी नदी को पार करती हो।
जब आपको वह जगह मिल जाए, तो उसी शाम वापस आएं और किसी सुविधाजनक पेड़ के तने या झाड़ी के पीछे छिप जाएं; और फिर, चाहे कुछ भी हो जाए, एकदम शांत बैठे रहें और आस-पास के रास्तों, आग बुझाने वाली जगहों या नदी-नालों पर पैनी नज़र रखें। अगर आप भाग्यशाली रहे, तो हो सकता है आपको कोई शिकारी पैंथर इनमें से किसी एक पर चलता हुआ दिखाई दे, जो शायद बीच-बीच में पेड़ों की ओर देखकर किसी बंदर या किसी बड़े जंगली पक्षी की तलाश कर रहा हो। यह तो ज़ाहिर सी बात है कि ऐसी निगरानी में आपको बाघ, हाथी या हिरण की कई प्रजातियों में से कोई एक भी दिख सकती है।
लेकिन फिलहाल मान लेते हैं कि आप सिर्फ एक पैंथर की तलाश में हैं। अगर आपको जंगल में कोई तालाब या नमक चाटने की जगह मिल जाए, तो उसके पास किसी छाया में या अगर चींटियों का टीला उपलब्ध हो तो उसके पीछे लेट जाना सुविधाजनक होगा। जंगल के विभिन्न जीवों को ऐसी जगहों पर आते-जाते देखना आपके लिए काफी मनोरंजक होगा। अगर कुछ समय बाद आपको कोई पैंथर या बाघ आपके जैसी ही जगह पर बैठा हुआ दिखाई दे, तो ज्यादा आश्चर्यचकित न हों, हालांकि मैं आपको चेतावनी देना चाहूंगा कि उन्हें पहचानना आपके लिए बहुत मुश्किल होगा, क्योंकि वे बहुत चुपचाप चलते हैं। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, मांसाहारी जीव ऐसी जगहों पर छिपकर अपने प्राकृतिक भोजन की प्रतीक्षा करते हैं।
मुझे याद है कि एक बार मैं एक पेड़ के तने के पीछे घास में लेटा हुआ था, जहाँ से एक उथली खाई के कोने में बने नमक के टीले का नज़ारा दिखता था। पहले की जाँच से पता चला था कि चित्तीदार हिरण और सांभर बड़ी संख्या में इस नमक के टीले पर आते थे। शाम ढल रही थी, तभी मेरे ठीक पीछे हल्की सी सरसराहट सुनाई दी, जिससे मैंने धीरे से अपना सिर घुमाकर पीछे देखा। वहाँ मैंने एक पैंथर को देखा जो मुझे स्पष्ट रूप से आश्चर्यचकित होकर देख रहा था। जब उसने देखा कि उसे देख लिया गया है, तो वह खड़ा हो गया और भागने के इरादे से आधा मुड़ गया। फिर उसने एक बार फिर मेरी तरफ देखा, मानो कह रहा हो, 'क्या तुम यहाँ से दफ़ा नहीं हो सकते?' अंत में वह चला गया।
इन जानवरों को उनके शावकों के साथ या बाघिन को उनके शावकों के साथ देखना बेहद मनमोहक होता है। माँ की देखभाल का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मांसाहारी जानवर अपने शावकों को तब तक गुफा से बाहर नहीं लाते जब तक वे ठीक से चलने-फिरने लायक न हो जाएं और शिकार के बुनियादी नियम न समझ लें। तब तक उन्हें गुफा में ही सुरक्षित रखा जाता है। बहुत छोटे होने पर उन्हें केवल दूध पिलाया जाता है। जब वे थोड़े बड़े हो जाते हैं, तो माँ उन्हें कच्चा मांस खिलाना शुरू कर देती है, जिसे पहले वह खुद खाकर थोड़ा पचा लेती है और फिर शावकों के खाने के लिए उल्टी कर देती है। जैसे-जैसे शावक ठोस मांस पचाने में सक्षम होते जाते हैं, माँ अपने शिकार को गुफा में लाती है—शायद कोई जंगली मुर्गा या मोर, और समय बीतने के साथ-साथ छोटे जानवर, हिरण की टांग तक, या शायद पूरा हिरण भी।
शावक बहुत लालची होते हैं और अगर उन्हें अकेला छोड़ दिया जाए तो वे ज़रूरत से ज़्यादा खा लेते हैं और बीमार पड़ जाते हैं। मैंने कई तेंदुआ और बाघ के शावक पाले हैं और पाया है कि तेंदुआ विशेष रूप से पेट की सूजन

(गैस्ट्राइटिस) से ग्रस्त होते हैं। वे कच्चे मांस के टुकड़े चट कर जाते हैं और खून के कटोरे भर-भरकर पीते हैं, यहाँ तक कि लगभग हिलने-डुलने में असमर्थ हो जाते हैं। एक बार जब उन्हें पेट की सूजन हो जाती है, तो यह बीमारी लगभग लाइलाज साबित होती है और वे तीन-चार दिनों में भीषण पीड़ा से मर जाते हैं। यह बीमारी उन्हें लगभग आठ महीने की उम्र तक प्रभावित करती है और मैंने इस बीमारी से कई शावकों को खोया है।
जंगली अवस्था में, एक माँ को यह बात सहज रूप से पता होती है और वह अपने बच्चों को उतना ही खाना देती है जितना उन्हें चाहिए होता है, कच्चे मांस के साथ प्राकृतिक दूध भी तब तक देती रहती है जब तक कि बच्चे काफी बड़े नहीं हो जाते और दूध पीते समय उसे काटने और खरोंचने नहीं लगते।
यदि गुफा पर किसी प्रकार का खतरा मंडराता है, चाहे वह घुसपैठ करने वाले मनुष्यों के रूप में हो या प्रजाति के नर के रूप में, जो अपने बच्चों को खाने का शौकीन होता है, तो वह उन्हें एक सुरक्षित स्थान पर ले जाती है। वह ऐसा करने के लिए उन्हें गर्दन के पिछले हिस्से से पकड़कर अपने मुंह में उठा लेती है।
जब शावक चलने लायक हो जाते हैं, तो माँ उन्हें शिकार करने और खुद शिकार करने की कला सिखाने के लिए बाहर ले जाती है। यह एक लंबी प्रक्रिया होती है। माँ पहले खुद शिकार को मारती है, जबकि शावक झाड़ियों में छिपे रहते हैं। फिर वह म्याऊँ जैसी कर्कश आवाज़ें निकालकर उन्हें बुलाती है, जिससे वे मरे हुए जानवर पर उछल-कूद कर सकें, उसे काट सकें और ताज़ा शिकार और गर्म खून का स्वाद चख सकें। ऐसा करते समय शावकों द्वारा निकाली गई भयंकर आवाज़ें सुनने में बहुत मज़ेदार होती हैं। वे अपना साहस बढ़ाते हैं और गुस्से में आकर एक-दूसरे पर और यहाँ तक कि अपनी माँ पर भी गुर्राते और झपटते हैं। अगला पाठ तब शुरू होता है जब वह शिकार को आधा ही मारती है, या उसके पैर की नसें घायल कर देती है, जिससे बच्चों को बाकी काम अपनी क्षमता के अनुसार पूरा करने का मौका मिलता है। वे जानवर के गले पर हमला करके और उसे काटकर मार डालते हैं—यह एक बहुत ही क्रूर प्रक्रिया है।
शिकार करने की कला सिखाने में बाघ के शावकों को पैंथर की तुलना में कहीं अधिक समय लगता है। पैंथर अपने शिकार का गला दबाकर और लटककर उन्हें मार डालते हैं, जबकि बाघ बड़ी कुशलता से गर्दन तोड़ देता है। इसलिए बाघ के शावकों को सिखाने में अधिक समय लगता है, और यह आम बात है कि एक बाघिन अपने शावकों को सिखाते समय झुंड में से चार या पाँच मवेशियों को मार देती है, जबकि अक्सर शावकों को अगर अकेला छोड़ दिया जाए तो वे केवल काटकर या नोंचकर काम बिगाड़ देते हैं, और अंततः जानवर बच निकलता है।
मैंने पहले भी बताया है कि बाघ एक बहुत ही वैज्ञानिक और कुशल शिकारी होता है। वह आम तौर पर अपने शिकार की पीठ पर आधा छलांग लगाता है, झुककर दूसरी तरफ से उसका गला पकड़ लेता है, और अपने अगले पंजों से मज़बूती से उसे जकड़े रखता है। फिर वह एक तेज़ और ज़ोरदार झटके से ऊपर और पीछे की ओर खींचता है जिससे जानवर गिर जाता है। शिकार और बाघ के संयुक्त वज़न के साथ-साथ गर्दन के अचानक और ज़ोरदार घुमाव के कारण ही शिकार की गर्दन टूट जाती है।
जब कोई मादा बाघिन या तेंदुआ अपने बच्चों के साथ शिकार पर निकलती है, तो बच्चे उसके पीछे-पीछे चलते हैं, माँ की हर हरकत की नकल करते हैं और ठीक उसी तरह ज़मीन पर या झाड़ियों के पीछे छिप जाते हैं। ऐसे समय में बाघिन के बहुत पास रहना खतरनाक होता है। वह अपने बच्चों की रक्षा में आप पर हमला कर सकती है। तेंदुआ मादा के हमले की संभावना कम होती है, हालांकि वह भयंकर

कार की सुरक्षित जगह से गोली चलाता है, जिसकी रोशनी बेचारे जानवर को चकाचौंध कर देती है और उसे बचने का ज़रा भी मौका नहीं देती!
एक घायल बाघ आमतौर पर अपने पीछा करने वाले के पास आने पर गुर्राकर अपनी मौजूदगी का पता दे देता है, लेकिन एक घायल पैंथर अक्सर चुपचाप और छुपकर बैठा रहता है और शिकारी के गुजर जाने के बाद उस पर पीछे से हमला करता है। इसलिए पैंथर को 'बदमाश' कहने वालों की बात में कुछ सच्चाई नजर आती है। दरअसल, बाघ आमतौर पर कहीं ज्यादा बहादुर और निश्चित रूप से कहीं ज्यादा ताकतवर होता है, और जब वह मारने के इरादे से हमला करता है तो वह अपना काम पूरी तरह से अंजाम देता है। हालांकि, एक पैंथर—जब तक कि वह आदमखोर न हो— अपने पीछा करने वाले को बुरी तरह घायल कर देता है और फिर भाग जाता है, बजाय उसे सीधे मारने के।
पैंथर अपने शिकार की हड्डियों को कुतरते हैं, भले ही वे बहुत सड़ चुकी हों। आमतौर पर, बाघ दूसरे दिन के बाद अपने शिकार के पास नहीं जाते। एक तो वे बहुत अधिक खाते हैं और दो-तीन बार के भोजन के बाद उनका सारा खाना खत्म हो जाता है। दूसरा कारण यह है कि वे साफ-सफाई से भोजन करते हैं। सड़ा हुआ मांस दोनों प्रजातियों के पंजों के नीचे फंस जाता है। इससे खतरनाक कीटाणु पनपते हैं और इनके काटने से ज़्यादा इनके खरोंच ही रक्त विषाक्तता का कारण बनते हैं। बाघ अपने पंजों के नीचे फंसी इस गंदगी के प्रति बहुत सजग रहते हैं और कुछ पेड़ों की मुलायम छाल पर खरोंच कर अपने पंजों को साफ करते हैं और उन्हें तेज भी करते हैं। पैंथर ऐसा बहुत कम करते हैं, इसलिए उनके पंजे आमतौर पर ज़्यादा संक्रमित होते हैं। छह या सात फीट की ऊंचाई पर ऐसे पंजे के निशान वाले पेड़, जहां बाघ अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर अपने अगले पंजों के पंजे साफ करता है, शिकारी के लिए अपने शिकार की उपस्थिति का एक शुभ संकेत होता है।
अन्य मायनों में भी, बाघ कहीं अधिक साफ-सुथरा भोजन करता है। जहाँ एक तेंदुआ अपने शिकार के पेट की तरफ से छेद करके अपना भोजन शुरू करता है, और जल्द ही पेट, आंतें, अपशिष्ट पदार्थ आदि सब कुछ उसके शिकार के मांस में मिल जाते हैं, वहीं बाघ गुदा के पास एक छेद बनाता है जिसमें वह अपना पंजा डालता है और आंतों और पेट को बाहर निकालता है, उन्हें लगभग दस फीट दूर घसीटता है और फिर साफ भोजन करना शुरू करता है। इस प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए, वह अक्सर जानवर की पूंछ को जड़ के पास से काटकर अलग कर देता है। जंगलों में पाए जाने वाले बड़े तेंदुआ कभी-कभी ऐसा ही करते हैं, लेकिन सामान्य और छोटे जानवर कभी नहीं करते, जो जल्द ही खुद को ऐसे भोजन में मिला लेते हैं जिसमें आंतें और मल सब कुछ शामिल होता है।
एक बाघिन और उसके शावकों की गुफा या मांद, पैंथर के परिवार द्वारा बसे हुए स्थान की तुलना में बहुत साफ-सुथरी रखी जाती है, और स्पष्ट रूप से हड्डियों और अन्य अपशिष्ट पदार्थों से मुक्त प्रतीत होती है जो लगभग हमेशा पैंथर के रहने वाले स्थानों पर मौजूद होते हैं।
प्रजनन के मौसम को छोड़कर, बाघ जंगल में अपनी उपस्थिति का संकेत पैंथर की तुलना में कहीं अधिक देते हैं। भारत के जंगलों में रहने वाली आदिवासी जनजातियाँ इस बात की पुष्टि करेंगी और आपको शिकार के दौरान बाघों द्वारा आमतौर पर अपनाए जाने वाले रास्तों की दिशा बताएँगी। उनकी मधुर, गहरी और धीमी कराह, जो उस अविस्मरणीय 'ऊ-ऊ-ओंग' की आवाज़ में समाप्त होती है, जो विशाल वन वृक्षों के नीचे घोर अंधेरे में या चमकीली चाँदनी में घाटियों और घने जंगलों में गूंजती है, जंगल प्रेमी के कानों को संगीत की तरह लगती है।

जीवंत सुंदरता और शक्ति के साथ जितनी बार चाहें देख सकते हैं; जबकि एक सजी हुई ट्रॉफी, किसी टूटे हुए अंडे के छिलके या रेशम के खोल की तरह, कभी खूबसूरत रहे जानवर का मात्र खोखला ढांचा है जो समय और कीड़ों द्वारा धीरे- धीरे नष्ट हो जाएगा।

□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□

□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□, □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□

□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□, □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□, □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□, □□ □□□ □□ □□□-□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□, □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□

□□□ □□□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□-□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□, □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□

□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□-□□□□□, □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□, □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□, □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□, □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□

□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□, □□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□, □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□, □□ □□□□□ □□□□ □□□□, □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□, □□, □□□□□ □□ □□□ □□□ □□, □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□

□□□□-□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□-□□□□ □□□ □□□ □□, □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□, □□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□, □□□□, □□□□□ □□□□□□, □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□, □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□

फिर, रामू ने अपने साथ आए ग्रामीणों को उस पेड़ पर जमीन से लगभग बीस फीट ऊपर एक मचान बनाने का निर्देश दिया, और स्वयं छिपने की कला में निपुण होने के कारण, उसने इसे पत्तियों से चतुराई से छिपा दिया, ताकि यह पैंथर की नजर में बिल्कुल भी न आए।
उस शाम चार बज चुके थे, तब जाकर काम पूरा हुआ। रामू मचान पर चढ़ा और फिर बकरी को रस्सी से उसके गले में बांधकर जमीन में गाड़े गए एक खंभे से जोड़ दिया गया।
जब ग्रामीण चले गए, तो बकरी ने खुद को अकेला पाकर गाँव के रास्ते की ओर देखा और जोर-जोर से मिमियाने लगी। परिस्थितियाँ बिल्कुल अनुकूल थीं, और पैंथर ने बकरी की आवाज सुनी और लगभग छह बजे, जब तक रोशनी अच्छी थी, उस पर झपट्टा मारा। रामू ने अपनी बंदूक में एल.जी. कारतूस भर रखा था, जिसे उसने पैंथर पर तब दागा जब पैंथर ने बकरी को उसके गले से पकड़कर जमीन पर गिरा रखा था। एक ज़ोरदार खांसी की आवाज आई; और पैंथर उछलकर झाड़ियों में भाग गया। बकरी, जो पहले से ही दम घुटने और गले में लगे घाव से मर रही थी, एक छर्रा उसके कान से होते हुए मस्तिष्क में जा लगा और उसकी तुरंत मौत हो गई।
रामू ने कुछ देर इंतजार किया, फिर बरगद के पेड़ से नीचे उतरा और जल्दी से गांव की ओर लौट गया, जहां उसने लोगों से कहा कि उसे पूरा यकीन है कि उसने पैंथर को गोली मार दी है और उसे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे उसे अगली सुबह मृत पाएंगे।
सुबह होते ही पुरुषों का एक बड़ा दल इकट्ठा हुआ और रामू के नेतृत्व में बरगद के पेड़ के पास गया। वहाँ उन्होंने देखा कि रात के दौरान एक लकड़बग्घे ने बकरी को पूरी तरह खा लिया था। रामू ने उस दिशा की ओर इशारा किया जिधर तेंदुआ कूदा था और सभी पुरुष दल ने मिलकर उसकी तलाश शुरू कर दी। कुछ ही देर में उन्हें झाड़ियों और लैंटाना के पत्तों पर खून के निशान मिले, जिससे पता चला कि उसने वास्तव में तेंदुआ को निशाना बनाया था। लेकिन तेंदुआ का कोई निशान नहीं मिला, हालांकि दल ने एक मील से अधिक दूर तक निशान का पीछा किया, लेकिन अंत में वह निशान गायब हो गया।
इसके बाद दो महीने तक मवेशियों या बकरियों पर कोई नया हमला दर्ज नहीं किया गया, और रामू सहित सभी को यकीन था कि पैंथर किसी झाड़ी में चला गया होगा और मर गया होगा।
फिर एक शाम, लगभग 16 साल का एक लड़का उसी जंगल के रास्ते गाँव लौट रहा था। वह अकेला था। एक मोड़ पर आते ही उसने लगभग बीस गज की दूरी पर एक पैंथर को अपने पिछले पैरों पर बैठा हुआ देखा, जो सीधे उसकी ओर देख रहा था। वह वहीं रुक गया, यह सोचकर कि पैंथर आम पैंथरों की तरह भाग जाएगा। लेकिन इस पैंथर ने ऐसा कुछ नहीं किया। इसके बजाय, उसने अपनी स्थिति बदल ली और दुबक कर बैठ गया और भयंकर रूप से गुर्राने लगा।
लड़का मुड़कर उसी रास्ते भागा जिससे वह आया था, और पैंथर उसका पीछा करने लगा। सौभाग्य से, जिस जगह उसने लड़के को पकड़ा, वहाँ जंगल की सीमा के पार सड़ी हुई लकड़ी का एक टुकड़ा पड़ा था। जैसे ही पैंथर उसकी पीठ पर कूदा और गर्दन के पास उसके कंधे को काट लिया, वजन से लड़का ज़मीन पर गिर पड़ा, और गिरते समय उसने सड़ी हुई लकड़ी का टुकड़ा देखा। भय और हताशा ने उसके हाथों को ताकत दी और उसके दिमाग को असाधारण तेज़ी दी। लकड़ी को पकड़कर, वह एक तरफ लुढ़का और उसका सिरा पैंथर के मुंह में ठूंस दिया। इससे पैंथर ने अपनी पकड़ छोड़ दी, लेकिन इससे पहले कि वह छोड़ता, उसने अपने पंजों से लड़के की बांह और जांघों को बुरी तरह खरोंच दिया था। अपने पैरों पर उछलकर, लड़के ने

कई साल पहले—दरअसल 1941 में—मैंने इस पहाड़ी की चोटी पर एक छोटा सा खेत खरीदा था। मेरा इरादा इस खेत को, जो बैंगलोर से लगभग पचानवे मील दूर है, सप्ताहांत विश्राम स्थल के रूप में रखने का था, लेकिन मुझे नियमित रूप से वहां जाने का समय नहीं मिल पाता था। परिणामस्वरूप, खुली ज़मीन पर तेज़ी से बढ़ने वाली लैंटाना झाड़ी का अतिक्रमण होने लगा था।
मैंने लैंटाना को हटाने के काम की निगरानी करने के लिए लगभग तीन दिनों के लिए इस जगह पर आने का फैसला किया था, और जब मैं वहाँ पहुँचा तो संयोग से बकरी चराने वाले की मृत्यु के कुछ दिन बाद का समय था। काम के लिए मैंने जिन कुलियों को रखा था, उन्होंने मुझे उस पैंथर के बारे में बताया, जिसके बारे में किसी भी अखबार में कोई खबर नहीं छपी थी। उन्होंने मुझे यकीन दिलाया कि वह अभी भी गाँव के आसपास मंडरा रहा है, क्योंकि उन्होंने ठीक एक दिन पहले ही उसके पदचिह्न फिर से देखे थे।
यह खबर मुझे दिलचस्प लगी और मैंने सोचा कि क्यों न उस जानवर को मारने की कोशिश की जाए। मैं अपनी दोनों राइफलें साथ नहीं लाया था, सिर्फ अपनी बारह बोर की शॉटगन लाया था, क्योंकि येल्लागिरिस में जंगली मुर्गे बहुतायत में पाए जाते हैं और जितनी बार भी मैं वहाँ गया था, हर बार खाने के लिए दो-तीन मुर्गे मार गिराए थे। इसके अलावा, इसी उद्देश्य से मैं अपने साथ आपात स्थिति के लिए सिर्फ दो एल.जी. कारतूस लाया था, बाकी नंबर छह के कारतूस जंगली मुर्गों के लिए थे। इसलिए मुझे पैंथर को सिर्फ उन्हीं दो एल.जी. कारतूसों से मारना था।
दोपहर के करीब मैंने लैंटाना पर काम रोक दिया और मजदूरों के साथ इलाके का जायजा लेने वापस चला गया। स्थिति वैसी ही थी जैसा मैंने अनुमान लगाया था। जंगल एक संकरी पट्टी में बदल गया था जिसमें लैंटाना उगी हुई थी और वह पट्टी गांव की सीमा से लगे कुछ खेतों पर आकर खत्म हो जाती थी। इन्हीं खेतों में से एक के अंत में एक पगडंडी पर एक पैंथर के पदचिह्न साफ दिखाई दे रहे थे— उसके पंजों को देखकर लग रहा था कि वह काफी बड़ा वयस्क नर पैंथर था। वह पिछली रात ही उस रास्ते से गुजरा था।
मैं गाँव गया और वहाँ के पटेल (मुखिया) से अपना परिचय दिया, जिनसे मैं पहले कभी नहीं मिला था, और उन्हें बताया कि मैं वहाँ कैसे पहुँचा। उन्होंने मेरी उपस्थिति पर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की और हर संभव सहयोग का वादा किया। हमारी बातचीत हुई और मैंने पटेल को बताया कि मैं पैंथर के खिलाफ अपने अभियान के शुरुआती चरण में चारा के रूप में इस्तेमाल करने के लिए एक बकरी खरीदना चाहता हूँ।
और यहीं पर पटेल के सहयोग की आवश्यकता पड़ी, क्योंकि उनके गाँव में कोई बकरी उपलब्ध नहीं थी। बड़ी मुश्किल और देरी के बाद वे मेरे लिए पास के एक छोटे से गाँव से एक बकरी का बच्चा ला पाए, जो इतना छोटा था कि बाँधने पर मिमियाता था। पटेल स्वयं मेरे साथ आए, और उनके साथ चार अन्य लोग भी थे, जिनमें से एक बकरी को आगे ले जा रहा था, और बाकी लोग कुल्हाड़ी लिए हुए थे जिनसे मचान बनाया जाना था।
वे मुझे उसी रास्ते से वापस उस जगह ले गए जहाँ चरवाहे पर हमला हुआ था, और अंत में उस स्थान पर जहाँ उनके अवशेष मिले थे। वह स्थान 'मद्रास काँटे' या 'कोरकापुल्ली' के नाम से जाने जाने वाले इंगा डलसिस पौधे की छोटी-छोटी झाड़ियों से घना आच्छादित था। वहाँ ज़मीन पर बैठना असंभव था, क्योंकि काँटे इतने पास-पास उगे थे कि दो-चार गज की दूरी से आगे किसी भी जानवर को

में 'पेरियामलाई' या 'बड़ी पहाड़ी' नाम की एक पहाड़ी की पथरीली चोटी पर एक पैंथर को धूप सेंकते हुए देखा था। येल्लागिरि पर्वतमाला ऊपर एक पठार बनाती है, और यह पेरियामलाई एकमात्र पहाड़ी है जो पठार से ऊपर उठती है और अर्धचंद्राकार येल्लागिरि पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी है। यह समुद्र तल से लगभग 4,500 फीट ऊपर है।
मैं पटेल के घर गया और उन्हें सोता हुआ पाया, लेकिन वे थोड़ी देर में जाग गए और मुझे पीने के लिए गर्म दूध से भरा एक बड़ा 'चुम्बो' दिया, जो एक गोल पीतल का बर्तन होता है, जो पानी के छोटे बर्तन जैसा दिखता है। फिर मैंने उनसे कहा कि वे उन पशुपालकों को बुलाएँ जिन्होंने पेरियामलाई पर पैंथर को देखा था और उनसे कहें कि वे मेरे साथ पहाड़ी पर चलें और उस खास चट्टान को दिखाएँ जहाँ पैंथर अक्सर देखा जाता था।
इन दोनों व्यक्तियों को मेरे साथ चलने के लिए राजी करने में कुछ समय लगा। वे बिल्कुल अनिच्छुक थे और मैं देख सकता था कि वे निश्चित रूप से डरे हुए थे। हालांकि, पटेल ने उन्हें मनाने के लिए अपने ही तरीके अपनाए, जिनमें इनकार करने पर प्रतिशोध की धमकी देना भी शामिल था, इसलिए अंततः मैं उनके साथ रवाना होने में सफल रहा।
पेरियामलाई गांव से लगभग तीन मील पूर्व में स्थित है और जलारपेट से पश्चिम की ओर जाने वाले रास्ते के विपरीत दिशा में है। कुल मिलाकर, इस पहाड़ी और उस स्थान के बीच लगभग पाँच मील की दूरी थी जहाँ दुर्भाग्यपूर्ण डाकिया मारा गया था। इसके अलावा, बीच की लगभग सारी ज़मीन खेती योग्य थी। पेरियामलाई को ढकने वाला जंगल येल्लागिरी पर्वतमाला की ढलानों से उत्तर की ओर फैले अर्धचंद्राकार हिस्से की ओर जाता था। मुझे यह देखकर अच्छा नहीं लगा क्योंकि मुझे लगा कि मवेशी चराने वालों ने शायद कोई दूसरा ही तेंदुआ देखा होगा, न कि वह जिसने डाकिया को मारा था।
पेरियामलाई की तलहटी पर पहुँचकर, मेरे दोनों साथियों ने लगभग 300 फीट ऊपर उभरी एक चट्टान की ओर इशारा करते हुए बताया कि उन्होंने कई दोपहरों को वहीं पैंथर को धूप सेंकते देखा था। पहाड़ी की तलहटी से लेकर चट्टान की तलहटी तक और पेरियामलाई के लगभग आधे हिस्से तक, जहाँ से असली जंगल शुरू होता था, घनी लैंटाना झाड़ियाँ उगी हुई थीं। मैं देख सकता था कि, जैसा कि दक्षिण भारत के कई छोटे वन मार्गों के साथ हो रहा था, लैंटाना धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से जंगल पर अतिक्रमण कर रही थी और मूल पेड़ों को दबा रही थी। येल्लागिरी पर्वतमाला की तरह ही, पेरियामलाई भी पत्थरों के ढेर से बनी एक पथरीली पहाड़ी है और लैंटाना के उस विशाल जंगल और चट्टानों के बीच पैंथर को ढूँढना एक असंभव कार्य था, क्योंकि लैंटाना का जंगल अभेद्य था। इसलिए मैंने पहाड़ी की तलहटी में उगने वाले एक पेड़ के नीचे एक जगह चिह्नित की और उन आदमियों से कहा कि हम गांव वापस जाकर चारा लाएंगे, और उन्हें उसे लेकर वापस आना चाहिए और उसे उस जगह पर बांध देना चाहिए जिसे मैंने चुना था।
इसलिए हम वापस गए और पटेल ने मेरे लिए एक गधा मंगवाया। इस स्थिति में बकरी किसी काम की नहीं होती क्योंकि मेरा इरादा उसके साथ जागने का नहीं था। अगर बकरी मर जाती, तो तेंदुआ उसे एक ही बार में खा जाता और अगली रात उसके वापस आने का कोई कारण नहीं बचता, जबकि गधा इतना बड़ा था कि तेंदुआ पहले भोजन के बाद बचे हुए हिस्से के लिए वापस आ सकता था। इसके विपरीत एक नुकसान यह था कि बकरी अपनी मिमियाहट से तेंदुआ को आसानी से और जल्दी आकर्षित कर लेती, जबकि गधा चुप रहता।

इमारतें, जिन्हें कोट्टाई कहा जाता है, मिट्टी की दीवारों वाली हैं और उन पर जंगली घास और 'चोलम' अनाज के डंठलों के मिश्रण से बनी मोटी छप्पर की छतें हैं। उनके सामने एक छोटा सा गुलाब और क्रोटन का बगीचा है। उस समय मेरे पास लगभग तीन दर्जन मुर्गियाँ थीं, जिनमें लेगहॉर्न, रोड्स और ब्लैक माइनोरका शामिल थीं, और कुछ बत्तखें भी थीं। मेरा पीने का पानी एक छोटे से कुएँ से आता है जिसमें मैंने कुछ मछलियाँ डाली थीं, जिन्हें मैं मूल रूप से बैंगलोर से पानी साफ रखने के लिए लाया था। सामने एक छोटी सी धारा बहती है जो मेरी एक सीमा बनाती है, और बाकी तीन तरफ बांस के पेड़ लगे हैं। हालाँकि यह जगह छोटी है, फिर भी बेहद आरामदायक है, और बैंगलोर से रविवार को शांतिपूर्वक घूमने के लिए एक आदर्श स्थान है।
लगभग आधी ज़मीन नीची है और उस नाले से लगती है जिसका मैंने अभी ज़िक्र किया है। मैंने इस छोटी नदी से थोड़ा पानी लेकर एक किस्म का काला चावल उगाया है, जिसे 'पेगु चावल' के नाम से जाना जाता है और जो मूल रूप से बर्मा से आयात किया गया था। मेरी जानकारी के अनुसार, मेरा खेत दक्षिण भारत के उन गिने- चुने स्थानों में से एक था जहाँ उस समय यह काला बर्मा चावल उगाया जाता था। मुझे पता था कि इसे कई जगहों पर बोया गया था, लेकिन किसी न किसी कारण से इसकी खेती असफल रही।
इस फार्म के बारे में एक रोचक तथ्य यह था कि इसके दो कोट्टई में से एक पर उस एंग्लो-इंडियन महिला के भाई का भूत रहता था, जिससे मैंने 1941 में इसे 500 रुपये में खरीदा था; जो अंग्रेजी मुद्रा में लगभग 35 पाउंड के बराबर है। उस व्यक्ति की मृत्यु एक रहस्यमयी बीमारी से हुई थी, जिसके बारे में मुझे बताया गया था कि उसके बाएं हाथ और सीने में अचानक असहनीय दर्द होता था— संभवतः एंजाइना पेक्टोरिस। वह इस छोटे से फार्म से बहुत लगाव रखता था और कहा जाता है कि बंजर भूमि के रूप में इसे खरीदने के बाद उसने वहां पच्चीस साल से अधिक समय बिताया था। फिर उसने इसे अपनी बहन को दे दिया, क्योंकि उसका अपना कोई परिवार नहीं था। हालांकि, कहानी के अनुसार, उसकी मृत्यु के बाद, शाम ढलने के समय अक्सर गांव वाले उसे अपने कोट्टई के सामने खड़े देखते थे। इसके बाद, जाहिर सी बात है, गांव वाले उस जगह से दूर रहने लगे।
मेरी बहन ने मुझे उस कथित भूतिया घटना के बारे में तब तक कुछ नहीं बताया जब तक कि मैंने खेत खरीदकर उप-पंजीयक के सामने बिक्रीनामा पंजीकृत करवाते समय नकद भुगतान नहीं कर दिया। शायद उसे लगा होगा कि 'भूत' की वजह से मैं सौदा रद्द कर दूंगा। फिर उसने बताया कि उसका मृत भाई कभी-कभी रात में दोनों कोट्टई में घूमता था, और उसने उसे कई बार चांदनी रात में गुलाब के पेड़ों की देखभाल करते हुए देखा था, जो उसका खास शौक था। उसने यह भी बताया कि वह 'आत्मा' बिल्कुल हानिरहित थी, कोई आवाज नहीं करती थी, न ही कोई परेशानी पैदा करती थी, और पास जाने पर गायब हो जाती थी।
मैं यह बताना भूल गया कि कोट्टियों के साथ मुझे कुछ बहुत पुराना फर्नीचर भी मिला: प्रत्येक इमारत में एक पलंग, एक टूटी-फूटी ड्रेसिंग टेबल, दो अलमारियाँ और तीन-चार खस्ताहाल कुर्सियाँ। पलंग पुराने ज़माने के थे, जिनमें पट्टियाँ लगी हुई थीं।
मुझे वह पहली रात अच्छी तरह याद है जब मैं एक कोट्टाई में सोया था (संयोग से वही कोट्टाई जिसमें मेरे भाई की मृत्यु हुई थी), क्योंकि वह बरसात की रात थी और दूसरे कोट्टाई की छत टपक रही थी। मैंने बिना गद्दे वाला अपना पलंग लकड़ी के तख्तों से बने पलंग पर बिछाया और सोने के लिए लेट गया। लेकिन तख्ते चुभ रहे थे और मेरे कंधों और पीठ पर दबाव डाल रहे थे। कुछ देर तक

मजबूरीवश, मुझे पूरी रात जागते और सतर्क रहना पड़ता था और मैं बकरी की नींद में शामिल नहीं हो सकता था। मुझे उस बदकिस्मत बकरी से ईर्ष्या होती थी। मच्छरों ने मुझे परेशान कर दिया था, और तरह-तरह के कीड़े मेरे शरीर पर रेंग रहे थे। जंगली चूहे, जो पालतू चूहों से भी छोटे होते हैं, लैंटाना के पत्तों को सरसराते हुए और तनों पर रेंगते हुए आगे बढ़ रहे थे। एक बार कोई लंबी और मुलायम चीज़ सूखे पत्तों के बीच से और झाड़ी के किनारों से सरकती हुई गुजरी। वह एक सांप था। वह हानिरहित था या जहरीला, यह मैं नहीं जान सका। मच्छरों और कीड़ों के बावजूद मैं बिल्कुल स्थिर बैठा रहा, और रेंगने की आवाज़ बंद हो गई।
पैंथर नहीं आया। झाड़ी के नीचे सन्नाटे में कोई आवाज़ नहीं गूंजी, रात के पक्षी की पुकार भी नहीं। समय अपने लंबे और उबाऊ सफर पर चलता रहा। मेरी घड़ी की चमकदार सुइयाँ बहुत धीरे-धीरे घंटे गिन रही थीं। मुझे नींद आ रही थी, लेकिन कुछ पल के लिए भी आँखें बंद करने की इच्छा को रोकने की हिम्मत नहीं हुई। मैंने पैंथर के बारे में सोचना बंद करने के लिए दूसरी बातों और घटनाओं के बारे में सोचने की कोशिश की। लेकिन मेरे दिमाग में बस एक ही बात आई - उस बकरी को कोसना।
नए दिन की धुंधली रोशनी धीरे-धीरे छनकर आ रही थी, यहाँ तक कि किसी जंगली मुर्गे, मोर या किसी अन्य पक्षी की आवाज भी सुनाई नहीं दे रही थी। मैं उस झाड़ी से भारत का सबसे निराश व्यक्ति बनकर निकला। वह बकरी, जो खंभे के पास कुंडली मारकर सो रही थी, आलस से उठी, आराम से अंगड़ाई ली, अपनी छोटी पूंछ हिलाई और मुझे इस तरह देखा मानो कह रही हो, 'अब बताओ, असली बकरी कौन है, तुम या मैं?' जवाब जानते हुए भी मैंने कुछ कहने से परहेज किया।
इसके बजाय, मैंने उस बदकिस्मत जानवर को खोल दिया, जो मेरे पीछे-पीछे उस गाँव तक आ गया जहाँ पटेल रहते थे। वह सज्जन, उन्हीं लोगों के साथ जो एक दिन पहले हमारे साथ आए थे, यह देखने के लिए निकलने ही वाले थे कि मेरा क्या हाल हुआ। मैंने उनसे काली बकरी लौटाने को कहा और बताया कि मैं कुछ घंटे सो लूँगा और फिर खुद जाकर कोई बेहतर चारा ढूँढूँगा। मैं अपने घर गया और दोपहर तक सोता रहा।
जब मैं जागा तो मुझे भूख लग रही थी, इसलिए मैंने डिब्बाबंद सैल्मन मछली खोली और उसे बैंगलोर से लाई हुई रोटी के साथ खाया। रोटी थोड़ी सूखी हो गई थी, लेकिन उस पर डिब्बाबंद मक्खन की मोटी परत लगाने से उसका स्वाद बेहतर हो गया। इससे मेरा पेट दोपहर के भोजन के लिए भर गया। मैंने पहले ही अपने पोर्टेबल प्राइमस स्टोव पर चाय के लिए पानी उबालने के लिए रख दिया था और चाय वाकई ताज़गी देने वाली थी। दोपहर का भोजन करते समय मैंने एक और केतली में चाय उबाली और उसे अपनी पानी की बोतल में डाल लिया। रात भर जागने के लिए ज़रूरी सामान इकट्ठा करके मैं पटेलों के गाँव लौट आया। सौभाग्य से मौसम पिछली रात की तरह ही गर्म था, इसलिए ओवरकोट की ज़रूरत नहीं पड़ी।
मैंने अपनी बात को और मज़बूत करने के लिए पटेल को अपने साथ लिया और उस गाँव की ओर चल पड़ा जहाँ बकरियाँ उपलब्ध थीं। वहाँ, कुछ बकरियों को चुनने और फिर गरमागरम सौदेबाजी के बाद, मैं एक अधपकी बकरी को चुनने में कामयाब रहा जो मिमियाने की ज़्यादा संभावना रखती थी। शाम के 3:30 बज चुके थे जब हम उस जगह के लिए निकले जहाँ मैं पिछली रात रुका था, लेकिन वास्तव में कोई जल्दी नहीं थी, क्योंकि जगह पहले ही तय हो चुकी थी और कोई मचान लगाने की ज़रूरत नहीं थी।

उस घटना को हुए कई साल बीत चुके हैं, लेकिन येल्लागिरी या जावड़ी पर्वतमाला में उसके बाद किसी की भी मौत नहीं हुई है, इसलिए मुझे पूरा यकीन है कि उस रात आदमखोर सांप को पकड़ने में मैं सफल रहा था।

तीन

ओल्ड मुनुस्वामी और मगदी का पैंथर मैं जिस शहर में रहता हूँ, वह बैंगलोर, भारत के पूर्वी तट पर बंगाल की खाड़ी से लगे मद्रास शहर से लेकर पश्चिमी तट पर अरब सागर से लगे मंगलौर शहर तक खींची गई सीधी रेखा के लगभग मध्य में स्थित है। बैंगलोर समुद्र तल से लगभग तीन हजार फीट ऊपर एक पठार पर बसा है। यहाँ रहने वाला कोई भी व्यक्ति इसकी अनूठी जलवायु को कभी नहीं भूल सकता—न तो बहुत गर्म, न बहुत ठंडा, न ही बहुत बरसात, न बहुत सूखा—नवंबर से फरवरी के मध्य तक सर्दियों में सुहावनी धुंध भरी सुबहें और गर्मियों में भी ताजगी भरी ठंडी सुबहें। बैंगलोर नाम कन्नड़ शब्द 'बंगाल उरु' का अंग्रेज़ीकरण है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'बीन शहर', इसलिए इसे 'बीन का शहर' के नाम से जाना जाता है; और बैंगलोर के स्वादिष्ट फलों और सब्जियों का स्वाद चखने वाला कोई भी व्यक्ति इन्हें कभी नहीं भूल सकता, चाहे वे उष्णकटिबंधीय हों या यूरोपीय।
द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक बैंगलोर एक शहर के रूप में विकसित होने से बहुत दूर था। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में इसकी रणनीतिक सैन्य स्थिति, एक बड़े औद्योगिक शहर के रूप में विकसित होने की अपार क्षमता और अन्य सभी खूबियों ने मिलकर इसे भारत का सबसे लोकप्रिय स्थान बना दिया। युद्ध के दौरान और बाद में शरणार्थियों की व्यापक आमद के कारण, इसकी जनसंख्या तीन गुना हो गई है, यह अत्यधिक औद्योगीकृत हो गया है और अब एक तेजी से विकसित होने वाला शहर है।
लेकिन यह बैंगलोर की खूबियों का वर्णन नहीं है; बस इतना कहना था कि मैं एक बेहद खूबसूरत शहर में रहता हूँ। बैंगलोर कई पहाड़ियों पर बसा है, और अगर आप उनमें से किसी एक पर खड़े होकर चारों ओर देखें, तो आपको क्षितिज पर तीन बहुत ऊँची पहाड़ियाँ दिखाई देंगी, जो क्रमशः उत्तर, उत्तर-पश्चिम और पश्चिम दिशा में हैं। ये सभी पहाड़ियाँ पैंतीस मील के दायरे में हैं और प्रत्येक की ऊँचाई चार हज़ार फीट से अधिक है। उत्तर की ओर वाली पहाड़ी सबसे ऊँची है। वास्तव में यह एक नहीं बल्कि तीन पहाड़ियाँ हैं, जिनमें तीन चोटियाँ मिलकर नंदीद्रूग समूह बनाती हैं। 'द्रूग' का अर्थ है 'पहाड़ी किला', और इन तीन चोटियों में से सबसे पूर्वी चोटी पर एक पुराने किले के अवशेष हैं, जो आज भी अच्छी हालत में हैं। इसे मैसूर के वीर योद्धा टीपू सुल्तान ने बनवाया था। यह किला एक ऐसे बिंदु पर स्थित है जहाँ से लगभग 600 फीट की सीधी खाई दिखाई देती है। इसे ‘टीपू की छलांग’ के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यहीं पर यह बूढ़ा सैनिक अपने दुश्मनों को, जो उसे परेशान करते थे, आँखों पर पट्टी बाँधकर एक पतले, हिलते हुए तख्ते पर खाई के ऊपर चलने के लिए मजबूर करता था। अगर वे तख्ते के अंत तक चलकर वापस आ जाते, तो उन्हें बख्श दिया जाता था। ऐसा लगता है कि इस कारनामे को अंजाम देने का कोई रिकॉर्ड नहीं है। शायद तख्ता बहुत ज्यादा हिलता था—या शायद उसे जानबूझकर बहुत ज्यादा हिलाया जाता था। कौन जाने? इतिहासकार इस बारे में स्पष्ट नहीं हैं।
बैंगलोर के उत्तर-पश्चिम में शिवनगंगा नामक पहाड़ी है। इसके शिखर पर एक मंदिर है और यह हिंदुओं का एक प्रमुख तीर्थस्थल है। इसके शिखर पर एक कुआँ भी है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह इतना गहरा है कि उसका कोई तल नहीं है। एक अन्य मान्यता यह भी है कि यह कुआँ एक गुप्त भूमिगत मार्ग का आरंभ है जो बैंगलोर तक पूरे पैंतीस मील तक जाता है।

देखते हुए, लोग कभी-कभार किसी तेंदुआ द्वारा अपने बैलों में से किसी एक को खा लेने पर आपत्ति नहीं करते—बशर्ते वह अत्यधिक लालची न हो जाए। लेकिन जब वह गायों को मारने लगता है—जो दूध और मक्खन देती हैं, जिनसे घी बनता है, जो पिघला हुआ मक्खन है और पूरे देश में खाना पकाने में उपयोग किया जाता है और जिसका बहुत महत्व है—तो वह एक अक्षम्य अपराध करता है और अब कुछ करने का समय आ गया है।
बैंगलोर में एक व्यक्ति रहता है—और मैं वर्तमान काल का प्रयोग कर रहा हूँ क्योंकि वह अभी भी वहीं है—जिसका नाम मुनुस्वामी है, जो खुद को एक पेशेवर 'सज्जन शिकारी' गाइड बताता है। वह एक धूर्त भी है। वह शिकार की खबरें शहर में लाता है और उन्हें नौसिखियों और अनुभवहीन लोगों को बताता है। 'मास्टर, व्हाइटफील्ड के पास चालीस जंगली सूअरों का झुंड है, जहाँ आप शिकार कर सकते हैं, वह बारह मील दूर है।' या, 'मास्टर, मगदी रोड पर दसवें मील और मैसूर शहर जाने वाली सड़क पर अठारहवें मील पर काले हिरणों के कई झुंड हैं, प्रत्येक में पचास जानवर हैं, जिन्हें मास्टर बहुत आसानी से मार सकते हैं।' वह जानकारी के बदले में उचित अग्रिम राशि मांगता है, और यदि वह तय दिन पर नौसिखिए के साथ उस स्थान पर जाता है, तो नौसिखिए आमतौर पर यह सोचकर हैरान रह जाता है कि उन ढेरों जंगली सूअरों और काले हिरणों का क्या हुआ, जिनके बारे में कहा जाता था कि वे वहाँ बहुतायत में हैं। लेकिन मुनुस्वामी को एक पल के लिए भी कम मत समझिए। वह बहुत बुद्धिमान और झूठ बोलने में माहिर है। ‘देखिए, मालिक,’ वह कहेगा, ‘मैंने आपको बहुत पहले ही जल्दी आने को कहा था। आप नहीं आए। कल ही बड़ी भीड़ में कुछ सैन्य अधिकारी साहब गाड़ी में आए थे। उन्होंने दो सूअरों को गोली मार दी। अब सब भाग गए हैं। मालिक, फिर किसी और दिन आइएगा, ठीक है?’
जंगली सूअर और काले हिरण मुनुस्वामी के लिए तो बस मामूली शिकार हैं। उन्हें अपने असली रूप में देखना तब संभव होता है जब वे किसी अनुभवहीन शिकारी को किसी तेंदुआ के बारे में खबर सुनाते हैं, जिसे जीवन का सबसे बड़ा सबक मिलने वाला होता है। वे बंगले के द्वार पर हाज़िर होंगे या सड़क पर साहब से कुछ इस तरह कहेंगे: 'सर, मैं बड़ा सज्जन शिकारी-गाइड हूँ। मैं मालिक को काले हिरण, जंगली सूअर, मोर, खरगोश, तीतर और हरे कबूतर दिखाता हूँ। या मालिक को चिड़िया और जंगली बत्तखें पसंद हैं? ये दिसंबर के महीने में बहुत सारी आती हैं - क्रिसमस का समय होता है। मालिक को बहुत बड़ा तेंदुआ मारना पसंद है? उनके पास एक बड़ा तेंदुआ है। यहाँ से केवल पंद्रह मील दूर, कंकनहल्ली रोड पर। मालिक पंद्रह चिप्स एडवांस देते हैं, मैं एक गधा बाँध देता हूँ। तेंदुआ गधे को मार देता है, मैं आकर मालिक को बताता हूँ। मैं एक बढ़िया मचान भी बनाता हूँ। मालिक तेंदुआ को आसानी से मार देते हैं।'
नौसिखिए को अचंभित कर दिया गया। एक जिंदा शिकार के लिए सिर्फ पंद्रह रुपये? एक पैंथर सिर्फ पंद्रह मील दूर? किसने कहा था कि शिकार करना एक महंगा या मुश्किल शौक है?
तो पंद्रह रुपये मुनुस्वामी को दे दिए जाते हैं, जिसे याद आता है कि मालिक को शिकार की खबर देते समय उसे खाने के लिए दो रुपये और बस के किराए के लिए तीन रुपये और देने होंगे। नौसिखिए को यह बहुत वाजिब लगता है और वह पाँच रुपये और दे देता है। मुनुस्वामी अत्यंत संतुष्ट होकर चला जाता है।
सबसे पहले वे स्थानीय ताड़ी की दुकानों में से एक पर जाते हैं। वे केवल ताड़ी ही पीते हैं और शराब से परहेज करते हैं, क्योंकि उनका कहना है कि वह

उनके लिए बहुत तेज़ होती है। लेकिन वे ताड़ी की तीन बोतलें पी जाते हैं। यह नारियल के पेड़ का किण्वित रस होता है। फिर बूढ़े मुनुस्वामी गहरी नींद में सो जाते हैं।
अगले दिन वह उठता है और पूरी लगन से 'पैंथर' को फंसाने के काम में जुट जाता है।
बैंगलोर में आवारा पशुओं, कुत्तों और गधों के लिए दो पशु बाड़े हैं। अगर आपका गधा बाड़े में बंद है, तो उसे वापस लेने का आधिकारिक शुल्क एक रुपया है। लगभग दस दिनों के बाद, लावारिस जानवरों को सार्वजनिक नीलामी में बेच दिया जाता है ताकि उन दस दिनों के दौरान उनके पालन-पोषण में हुए खर्च का कुछ हिस्सा वसूल किया जा सके। ये नीलामियाँ सप्ताह में लगभग दो बार होती हैं, और मुनुस्वामी के लिए इनमें से किसी एक में जाकर लगभग दो रुपये में गधा खरीदना बहुत आसान है। या फिर वह अवैध रूप से खुद को बंद जानवरों में से किसी एक का मालिक बताकर उस पर अपना दावा कर सकता है। आखिर, एक गधा दूसरे गधे जैसा ही दिखता है, और प्रभारी अधिकारी के पास मुनुस्वामी के दावे की सच्चाई की जाँच करने का कोई तरीका नहीं है, खासकर तब जब वह किसी मित्र या एजेंट को यह दावा करने के लिए भेजता है।
इस प्रकार मुनुस्वामी को वह गधा, जिसके लिए साहब ने उसे पंद्रह रुपये दिए थे, केवल दो रुपये में मिल गया, जिससे उसे तेरह रुपये का लाभ हुआ, जो उसकी प्रारंभिक लागत पर संभावित 650 प्रतिशत लाभ दर्शाता है। वाकई एक शानदार शुरुआत।
फिर वह साहब को बताए गए तेंदुआ के मिलने की जगह तक कई मील पैदल चलकर जाता है और गधे को वहाँ दो-तीन दिन के लिए बाँध देता है। तीसरे दिन सुबह तड़के वह खुद गधे को मार डालता है। वह इस तरह करता है: उसके पास एक बड़ा सा चाकू होता है जिसमें लगभग एक दर्जन चीज़ें लगी होती हैं, जिनमें एक गोल नुकीला औजार भी होता है, जो शायद घोड़ों के खुरों से पत्थर निकालने के लिए बनाया गया था। कम से कम मुझे तो यही बताया गया है, लेकिन मैं खुद पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हूँ। इस भद्दे औजार से वह बेचारे जानवर की गर्दन की नस में वार करता है और जब वह गिर जाता है, तो वह फिर से वार करता है, कुल मिलाकर चार घाव करता है, गले के दोनों तरफ दो-दो। उसी चाकू के धारदार सिरे से वह पेट चीरता है, आँतों को बिखेर देता है और बाहरी चमड़ी से मांस के कुछ टुकड़े नोच लेता है। फिर वह शव को टहनियों से ढक देता है। अंत में, वह अपने साथ लाए एक गंदे थैले से एक रहस्यमयी वस्तु निकालता है। क्या आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि यह क्या है? यह मुनुस्वामी का सबसे बेहतरीन करतब है। यह एक पैंथर का पंजा है, जिसे भूसे से भरकर बनाया गया है। इसकी मदद से वह जगह-जगह पंजों के निशान बनाता है।
दृश्य को अपनी विशेषज्ञता के अनुरूप तैयार करने के बाद, मुनुस्वामी कुछ आने देकर एक लॉरी में लिफ्ट लेकर शहर जाता है और बड़े उत्साह से साहब को बुलाता है। अनुभवहीन साहब भी उत्तेजित हो जाते हैं। हड़बड़ी में वह अपनी पत्नी से अपने लिए सैंडविच और थर्मस में चाय तैयार करवाता है, जबकि वह खुद अपनी राइफल साफ करता है, गोलियां, टॉर्च, बैटरी और कई अन्य छोटी-मोटी चीजें इकट्ठा करता है—जिनमें से अधिकांश का वह कभी उपयोग नहीं करता और वैसे भी वे बेकार ही हैं। फिर वह मुनुस्वामी को लेकर तेज गति से उस जगह की ओर निकल पड़ता है जहाँ 'पैंथर' ने 'हत्या' की है।
मुनुस्वामी ने ज़मीन पर बने पंजों के निशान और गधे के गले पर बने तेंदुए के दांतों के निशानों की ओर इशारा किया, और साहब आश्वस्त हो गए। उन्होंने दो

कुलियों की मदद से एक मचान बंधवाने का भी इंतज़ाम किया, जिनके काम के लिए उन्होंने दो-दो रुपये लिए, जबकि उन्हें उन्होंने केवल बारह आने ही दिए। अंत में, साहब के ऊपर जाने से पहले, उन्होंने एक सौदा तय किया। यदि मालिक तेंदुए को मार गिराता है, तो उसे मुनुस्वामी को बीस रुपये बख्शीश देनी होगी। यदि मालिक चूक जाता है—जो मालिक की अपनी गलती है—तो उसे अपने वफादार सेवक को दस रुपये देने होंगे। यदि तेंदुए नहीं मिलते—मालिक को यह नहीं भूलना चाहिए कि तेंदुए बहुत ही चालाक जानवर होते हैं और कभी-कभी शिकार पर वापस नहीं आते—तो मुनुस्वामी ने मालिक के लिए चिलचिलाती धूप में बहुत मेहनत की है और उसे पाँच रुपये मिलने चाहिए। सौदा तय हो गया। आश्चर्यजनक रूप से, मुनुस्वामी अपने गुरु पर उतना ही भरोसा करता है, जितना वह गुरु से अपने प्रति भरोसे की अपेक्षा करता है।
खैर, पैंथर नहीं आता—और इसका कारण भी बिल्कुल स्पष्ट है: कोई पैंथर है ही नहीं। मुनुस्वामी पहले अपने पाँच रुपये जेब में रख लेता है, फिर मालिक को यह कहकर दिलासा देता है कि पैंथर अप्रत्याशित प्राणी होते हैं और शायद अगली बार आ जाए। वह दूसरा गधा बाँधने की पेशकश करता है। और कहानी ऐसे ही चलती रहती है, जब तक कि नौसिखिए ने इन मायावी प्राणियों में से किसी एक को देखने का विचार ही छोड़ दिया और अपना ध्यान जंगली बत्तख या तीतर पर केंद्रित करने का फैसला कर लिया। यहाँ भी मुनुस्वामी काम आता है।
आप मुझसे पूछ सकते हैं: ‘आपको मुनुस्वामी के बारे में यह सब कैसे पता है?’ मैं भी एक समय ऐसा ही अनुभवहीन था और उन्होंने मुझे कम से कम चार बार बेवकूफ बनाया था। एक दिन मुनुस्वामी के साथ एक दुर्घटना घटी। वह मुझे उनके पगडंडियों के निशान दिखा रहे थे। एक आवारा कुत्ता हमें उत्सुकता से देख रहा था और अचानक एक झाड़ी में घुस गया और कपड़े का थैला लेकर बाहर आया। मुनुस्वामी घबराकर उसके पीछे भागे। कुत्ता भागा और थैले से कुछ धब्बेदार चीज़ गिर गई। मुनुस्वामी और मैं दोनों उसे लेने दौड़े। वह एक तेंदुआ का भरा हुआ पैर था। फिर, गधे की मौत से भी कहीं ज़्यादा भयानक मौत के खतरे के बावजूद, उन्होंने मुझे अपनी कार्यशैली विस्तार से बताई, ठीक वैसे ही जैसे मैंने आपको बताई है।
मैं धैर्यवान व्यक्ति हूँ और 'जीओ और जीने दो' के सिद्धांत में विश्वास रखता हूँ। अगर मेरे जैसे नासमझ लोग हैं, जो बस 'उठाए जाने' का इंतज़ार कर रहे हैं, तो मुनुस्वामी उन्हें क्यों न चुनें? इसलिए, मैंने कभी भी उनके खेल में बाधा नहीं डाली और मुनुस्वामी मुझे पसंद करते हैं।
यह मत सोचिए कि यह बताकर मैं उसका खेल बिगाड़ रहा हूँ, क्योंकि मुनुस्वामी बैंगलोर में फैले शिकारियों के गिरोह में नए सदस्य से मिलते समय हर बार अपना नाम बदल लेता है। वह रामैया, पूजा, पूनिया या सौ अन्य नामों से जाना जा सकता है। लेकिन अगर आप कभी बैंगलोर आएं और हमारे गिरोह में शामिल होना चाहें, तो मैं आपको उसके बारे में एक संकेत देता हूँ—एक सामान्य सा वर्णन। अगर कोई अंग्रेज़ी बोलने वाला 'सज्जन शिकारी-गाइड' आपसे मिले—एक दुबला-पतला, लंबा, अधेड़ उम्र का, गहरा काला आदमी, जिसके लंबे बाल पीछे की ओर बंधे हों और एक गांठ हो, और बड़ी उभरी हुई आँखें हों—चाहे उसने पगड़ी पहनी हो या टोपी, धोती, लुंगोटी या ढीली पतलून या शॉर्ट्स, और चाहे वह अपना नाम जैक जॉनसन ही क्यों न बताए, उससे दूर रहें और अपना पर्स किसी दराज में सुरक्षित रख दें। बहुत संभव है कि वह मेरा पुराना दोस्त मुनुस्वामी ही हो, वही खुशमिजाज 'टेढ़ा-मेढ़ा' गाइड।

बंदूक के साथ उधार ली थीं, लेकर मुनुस्वामी घटनास्थल पर पहुंचा, अपनी मचान बांधी और पैंथर के कंधे के ऊपरी हिस्से में कारतूस से गोली मार दी। दूसरे कारतूस में मौजूद एल.जी. (लॉन्ग-ग्लाइसीलिएटेड) - क्योंकि उसने दोनों कारतूस एक साथ चलाकर सुनिश्चित किया था - ने भी उसे घायल कर दिया, लेकिन पैंथर फिर भी बच निकला। बाद में स्थिति का जायजा लेते हुए, मुनुस्वामी ने फैसला किया कि घायल पैंथरों का पीछा करने के लिए अब उसकी उम्र काफी बढ़ चुकी है। इसके अलावा, जिस 'प्रचार स्टंट' ने उसकी कल्पना को हवा दी थी, उससे मिलने वाले फायदे अब पैंथर द्वारा छोड़े गए खून के निशान का पीछा करने के खतरों के मुकाबले काफी नहीं लग रहे थे। इसलिए उसने उस दिन का काम वहीं खत्म करने का फैसला किया और बैंगलोर लौट गया।
कई सप्ताह बीत गए, और फिर वही पुरानी कहानी, जो हमेशा एक ही तरह से शुरू होती है, अपने सामान्य क्रम में आगे बढ़ी। मगदी से क्लोज़पेट तक फैली 22 मील लंबी सड़क के किनारे बसे कुछ गांवों के बाहर एक पैंथर ने कुत्तों और बकरियों पर हमला करना शुरू कर दिया। दो मामलों में, बकरियों के रखवालों ने अपनी बकरियों को बचाने की कोशिश की और उन पर हमला हो गया। इस हमले में एक आदमी और एक लड़के को बुरी तरह घायल कर दिया गया।
फिर एक जूटका चालक और उसका टट्टू कहानी में आए। तीन लोग एक रात क्लोज़पेट रेलवे स्टेशन पर मैसूर से आने वाली रात की ट्रेन से उतरे। उस समय बस सेवा उपलब्ध न होने के कारण, इन तीनों ने क्लोज़पेट से दस मील दूर स्थित अपने गाँव तक जूटका से जाने का फैसला किया। जूटका, उन लोगों के लिए जो इस शब्द से परिचित नहीं हैं, दो पहियों वाला वाहन होता है जिसकी छत बांस से मजबूत की गई चटाई की अंडाकार होती है, और इसे एक विशेष रूप से पाले गए छोटे आकार के टट्टू द्वारा खींचा जाता है। जूटका के टट्टू आम गाँव के टट्टुओं से मिलते-जुलते हैं, सिवाय इसके कि उनके बाल और पूंछ छोटे होते हैं।
जूटका अपने गंतव्य पर पहुँची और यात्रियों को उतार दिया। चालक ने गाँव में ही सोने और अगली सुबह क्लोज़पेट लौटने का फैसला किया। उसने अपने टट्टू को खोलकर उसे सूखी घास खिलाई, जो उसने गाड़ी के फर्श के ठीक नीचे लटकी बोरी में रखी थी। फिर वह सो गया।
टट्टू ने घास चर ली और फिर गांव की गली में भटकने लगा, इस उम्मीद में कि उसे वहां और घास मिल जाएगी। इस तरह वह गांव के बाहरी इलाके में पहुंच गया, जो कि एक छोटा सा गांव था।
गली के किनारे बनी आखिरी झोपड़ी के पीछे से अचानक कोई चीज़ उछलकर उसके बगल में आ गई और उसका गला नोचने लगी। ज़ोर से हिनहिनाते हुए टट्टू गली में वापस भाग गया। हमला करने वाली चीज़ ने टट्टू के गले पर अपनी पकड़ बनाए रखने की कोशिश की, लेकिन गिर पड़ी, हालांकि गिरने से पहले उसने उसे एक गहरा घाव दे दिया था। वह चीज़ पैंथर थी।
भयभीत टट्टू की आवाज़ और पैंथर की दहाड़ से जूटका मालिक की नींद खुल गई, जिसने देखा कि उसका जानवर उसकी ओर दौड़ रहा है। वह डर से कांपते हुए रुक गया, उसके गले से खून बह रहा था। उसने तुरंत अलार्म बजाया।
टट्टू जूतका को खींच नहीं सका; इसलिए अगले दिन मालिक उसे पैदल ही क्लोज़पेट वापस ले गया, जहाँ उसने पुलिस को मामले की सूचना दी। खबर फैल गई और यह बात सबको पता चल गई कि इलाका एक ऐसे पैंथर से खतरे में है जो किसी भी दिन आदमखोर बन सकता है।
कुछ ही समय बाद, मगदी गाँव से दो मील की दूरी पर एक व्यक्ति पर हमला हुआ और उसे बुरी तरह घायल कर दिया गया। कुछ दूरी पर अपने खेतों में काम कर रहे

उनके साथ जुड़ते गए। दस से अधिक लोगों के एक दल ने अंततः गंभीर हालत में दफ्फेदार को उठाया और उसे स्थानीय निधि अस्पताल ले गए। अगले दिन बैंगलोर से एक एम्बुलेंस बुलाई गई, जो उसे शहर के विक्टोरिया अस्पताल ले गई। पैंथर के विभिन्न हमलों की सभी रिपोर्टें दर्ज कर ली गई थीं, लेकिन जब उसने उनके ही एक सिपाही—और वह भी एक दफ्फेदार—पर हमला किया, तो पुलिस सचमुच हरकत में आ गई। उन्हें यह पता लगाने में ज्यादा समय नहीं लगा कि इस सारी परेशानी की जड़ कौन था, और इसी समय, शरारती शिकारी गाइड, बूढ़ा मुनुस्वामी, फिर से मैदान में आ गया।
पुलिस ने उसे पकड़ लिया। गवाहों ने गवाही दी थी कि उसने एक मचान बनाया और पैंथर के लिए बैठ गया। उन्होंने यह भी कहा कि उसने उसे घायल कर दिया था। ऐसा करने के लिए उसने बंदूक का इस्तेमाल किया होगा। क्या उसके पास बंदूक थी? क्या उसके पास शस्त्र लाइसेंस था? क्या वह बिना लाइसेंस वाली बंदूक छिपा रहा था? क्या उसने बंदूक उधार ली थी? किससे? क्यों? कब? कहाँ? क्या मालिक के पास लाइसेंस था? उसने कितने कारतूस लिए थे?
उन्हें एक सौ एक सवालों के जवाब देने थे। कुल मिलाकर, बेचारे मुनुस्वामी को समझ आ गया था कि उनका समय बहुत बुरा बीतने वाला है। उन पर लगे आरोपों की संख्या इतनी ज़्यादा थी कि अगर दाफेदार की ज़ख्मों से मौत हो जाती है तो उन पर 'संभावित हत्या' का आरोप लगाया जा सकता है—ये आरोप एक पूरा पन्ना भर देते थे और निस्संदेह उन्हें लंबे समय तक जेल में भेज देते।
तब मुनुस्वामी की जन्मजात सूझबूझ काम आई और उन्होंने अपना सबसे बड़ा सौदा किया। उन्होंने चार दिनों के भीतर पैंथर को गोली मारकर उसका शव जिला पुलिस अधीक्षक (डी.एस.पी.) के चरणों में रखने का वचन दिया। अगर वे असफल रहे, तो पुलिस उनके साथ जो चाहे कर सकती थी। अगर वे सफल रहे, तो उन पर लगे आरोप भुला दिए जाएंगे।
डीएसपी, एक व्यावहारिक अधिकारी होने के नाते, मुनुस्वामी पर मुकदमा चलाने की बजाय पैंथर को गोली मारने में अधिक रुचि रखते थे। क्योंकि यह स्पष्ट था कि यह जानवर आदमखोर बनने की राह पर था; जबकि मुनुस्वामी, अपने सभी कुटिल तरीकों के बावजूद, इतनी कुख्याति तक पहुँचने की संभावना नहीं थी। इसलिए डीएसपी ने उसे केवल चार दिन की सजा देकर लॉक-अप से रिहा कर दिया।
उसी दोपहर मैंने अपने दरवाजे पर लगातार 'सर, सर' की आवाज़ सुनी। यह मुनुस्वामी थे। उनकी आँखों से आंसू बह रहे थे—वे इतनी जल्दी कैसे बहने लगे, यह एक रहस्य है जो उन्होंने अभी तक मुझे नहीं बताया है—उन्होंने अपनी पूरी दुख भरी कहानी शुरू से अंत तक सुनाई, और उस पैंथर के बारे में वह सारी जानकारी दी जो उन्हें पता थी या जो वे जुटा पाए थे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने यहाँ कहानी बताई है।
उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि उनके पास पैंथर को मारने के लिए सिर्फ़ चार दिन हैं, अगर वे ऐसा नहीं कर पाए तो उन्हें 'बड़ी-बड़ी जेल' जाना पड़ेगा, जैसा कि उन्होंने खुद कहा था। मैंने हँसते हुए उनसे पूछा कि वे भाग क्यों नहीं गए। उन्होंने माना कि यह विचार उनके मन में आया था, लेकिन पूरे भारत में उन्हें ऐसे खेल-प्रेमी साहब कहाँ मिलेंगे जो उन्हें इतनी आसानी से पैसे दे दें; ऐसी उदार नीलामी जहाँ वे सिर्फ़ दो रुपये में ज़िंदा गधे खरीद सकें; और, ओह! बैंगलोर में रहने के और भी कई फ़ायदे। इन विचारों से बूढ़ा आदमी टूट गया और उसकी आँखों से पहले से कहीं ज़्यादा आँसू बहने लगे। मुझे यह जानकर हैरानी नहीं होती कि उनमें से कुछ आँसू सचमुच के थे।

चार

शिवानीपल्ली का काला पैंथर बैंगलोर के नज़दीक होने और सप्ताहांत में घूमने-फिरने या चांदनी रात में कुछ घंटों के लिए आराम से समय बिताने के कारण शिवानीपल्ली हमेशा से मेरी पसंदीदा जगह रही है। आपको बस बैंगलोर से 41 मील दूर डेनकनिकोट्टा तक गाड़ी से जाना है, फिर चार मील गाड़ी चलाकर कार से आगे बढ़ना है, और फिर गाड़ी छोड़कर पांच मील पैदल चलकर शिवानीपल्ली पहुंचना है। यह छोटा सा गांव आरक्षित वन के किनारे पर बसा है।
इस छोटे से गाँव से लगभग तीन मील पश्चिम में ज़मीन लगभग तीन सौ फीट नीचे ढलान पर जाती है, जहाँ एक धारा बहती है। गाँव के दक्षिण में एक और धारा पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है, जो कई झरनों के साथ तेज़ी से नीचे उतरती है और पश्चिमी घाटी के तल पर बहने वाली पहली धारा में मिल जाती है। शिवानीपल्ली के पूर्व में जंगल एक पहाड़ी पर लगभग पाँच सौ फीट की ऊँचाई पर स्थित गुलहट्टी बंगलो नामक वन लॉज तक फैला हुआ है। गुलहट्टी के पूर्व में, लगभग साढ़े चार मील की दूरी पर, अय्यूर नामक स्थान पर एक और वन बंगलो है। उत्तर-पूर्व में चार मील दूर कुचुवड़ी नामक एक पथरीली पहाड़ी के पास वन विभाग का एक शेड है। यह चंदन का क्षेत्र है, और शेड में एक प्राचीन विशाल तराजू रखा हुआ है जिसका उपयोग जंगल से लाए गए चंदन के टुकड़ों को तौलने के लिए किया जाता है, जिन्हें बाद में डेनकनिकोट्टा स्थित ब्लॉक मुख्यालय में वन विभाग के गोदामों में भेजा जाता है।
शिवानीपल्ली के उत्तर की ओर, घनी झाड़ियों वाला जंगल सड़क तक और उससे भी आगे, पाँच मील की दूरी तक फैला हुआ है, जहाँ आपको कार छोड़कर पैदल ही गाँव की ओर प्रस्थान करना होगा।
शिवानीपल्ली में मुश्किल से आधा दर्जन फूस की झोपड़ियाँ हैं और यह इतना बड़ा भी नहीं है कि इसे एक छोटा गाँव कहा जा सके। इससे काफी बड़ा गाँव सालिवरम उत्तर दिशा में तीन मील की दूरी पर स्थित है, जो मुख्य सड़क की ओर जाने वाले पैदल मार्ग के लगभग आधे से थोड़ा अधिक आगे है।
वन विभाग की अग्नि-रेखाएँ शिवानीपल्ली को चारों ओर से घेरे हुए हैं, जो गाँव से आधे मील से एक मील की दूरी पर स्थित आरक्षित वन क्षेत्र की शुरुआत को दर्शाती हैं। दक्षिण-पूर्वी कोने पर जहाँ ये दो अग्नि-रेखाएँ मिलती हैं, वहाँ लगभग एक जलकुंड है। गाँव के पश्चिम में तीन सौ फुट की गहरी खाई के तल पर मिलने वाली दो धाराएँ जंगल से होते हुए शिवानीपल्ली से लगभग आठ मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक अन्य बड़े गाँव, एंचेटी की ओर बहती हैं। मैंने आसपास के क्षेत्र की स्थलाकृति का यह विस्तृत विवरण इसलिए दिया है ताकि आप उस क्षेत्र की एक तस्वीर अपने मन में बना सकें जिसमें वह रोमांचक घटना घटी जिसका वर्णन मैं करने जा रहा हूं।
यह पैंथर की गतिविधियों के लिए एक आदर्श स्थान है, जहाँ चारों ओर छोटी-छोटी पथरीली पहाड़ियाँ, झाड़ियाँ, घने जंगल और दो जलधाराएँ (पानी के स्रोत के अलावा) मौजूद हैं। ये जलधाराएँ न केवल पैंथरों के लिए, बल्कि उनके शिकार के लिए भी निरंतर जल आपूर्ति सुनिश्चित करती हैं। पानी की इस नियमित आपूर्ति के कारण, शिवानीपल्ली में मवेशियों का एक बड़ा झुंड रहता है, जो इन बिल्लियों के लिए एक अतिरिक्त आकर्षण है!

परिणामस्वरूप, इस क्षेत्र के आसपास काफी संख्या में पैंथर लगभग स्थायी रूप से निवास करते हैं। यही मुख्य कारण है कि 1929 में जब मैंने पहली बार शिवानीपल्ली का दौरा किया था, तो मैं इसकी ओर आकर्षित हुआ था।
यह जंगल कई प्रकार का है, जिसमें जलकुंड के आसपास उगने वाले घने बांस से लेकर दक्षिणी और पश्चिमी किनारों पर घने जंगल तक, और पूर्व और उत्तर की ओर चंदन के पेड़ों से घिरे हुए काफी पतले जंगल और झाड़ियाँ शामिल हैं। ग्रामीण इलाका बेहद खूबसूरत है, पश्चिम क्षितिज पर धुंधली नीली रेखा की तरह फैली पहाड़ियों का मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। सुबह-सुबह जंगल से कोहरे की चादर उठती है और पहाड़ियों की निचली सतह को पूरी तरह से ढक लेती है, जिससे उनकी चोटियाँ ऊनी ऊन के सागर में उबड़-खाबड़ द्वीपों की तरह दिखाई देती हैं। बादल वाले दिन इसका ठीक उल्टा नजारा देखने को मिलता है, जब तूफानी बादल पहाड़ियों की चोटियों पर छा जाते हैं और उन्हें पूरी तरह से छिपा लेते हैं, तो केवल उनकी ढलानों का निचला हिस्सा ही दिखाई देता है, जिससे ऐसा लगता है मानो यह इलाका लगभग समतल है।
मैंने शिवानीपल्ली के आसपास के जंगलों में चांदनी रातों में कई बार घूमते- घूमते समय बिताया है। ये जंगल उर्दू क्रिया 'घूम' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'इधर-उधर भटकना'। यहाँ हर तरह के जानवर पाए जाते हैं, सिवाय बाइसन के, जिनकी संख्या सीमित है। चांदनी रात में जंगल में घूमते समय, हाथी से सामना होने, बाघ की गुर्राहट, पैंथर की कर्कश आवाज या घबराए हुए सांभर के भागने की आवाज सुनने की संभावना हमेशा बनी रहती है। आप उन्हें देख नहीं पाएंगे—शायद हाथी को छोड़कर, क्योंकि ये दोनों मांसाहारी जानवर, और सांभर भी, बहुत चालाक होते हैं और आपको आते हुए बहुत पहले ही देख या सुन चुके होते हैं।
आपको शायद कोई भालू ज़मीन में दीमक या कंद की जड़ों को खोदते हुए या धीरे- धीरे चलते हुए ज़ोर-ज़ोर से सूंघते और फुफकारते हुए दिखाई दे। आप उसे देखने से बहुत पहले ही उसकी आवाज़ ज़रूर सुन लेंगे, क्योंकि वह घनी वनस्पति की धुंधली पृष्ठभूमि में एक काले धब्बे की तरह दिखेगा, चाँदनी में धूसर और भूतिया सा।
सन् 1934 में शिवानीपल्ली में एक अनोखी घटना घटी। एक चरवाहा अपने मवेशियों को दिनभर चराने के लिए जंगल ले गया था और वहां से लौट रहा था तभी उसने एक काले तेंदुआ को पानी के कुंड पर पानी पीते देखा। शाम के पांच बजने के कुछ ही समय बाद का समय था, जो मवेशियों को गांव के बाड़ों में वापस लाकर रात भर के लिए रखने का सामान्य समय होता है। सुबह करीब नौ बजे या उससे भी बाद में मवेशियों को दिनभर चराने के लिए जंगल में ले जाने और शाम को जल्दी वापस लाने का रिवाज है। देर से निकलने और जल्दी लौटने का कारण यह है कि गायों को दिन में दो बार दुहा जा सके।
इस प्रकार, जब चरवाहे ने पानी के किनारे उगी एक झाड़ी के पास खड़े एक काले पैंथर को देखा, तब लगभग पाँच बज चुके थे और अभी भी काफी उजाला था। वह शांति से तालाब का पानी पी रहा था। उसने कसम खाकर कहा कि वह बिल्कुल काला था और मेरे पास उस पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि जानबूझकर झूठ बोलने का कोई मतलब नहीं था। जब झुंड पास आया, तो पैंथर ने मवेशियों की ओर देखा; लेकिन जब चरवाहा अपने जानवरों के बीच आया, तो वह झाड़ियों में गायब हो गया।
काला तेंदुआ कोई अलग या विशेष प्रजाति नहीं है। यह केवल मेलेनिज़्म का एक उदाहरण है। कभी-कभी, हालांकि बहुत कम ही, एक ही झुंड में एक काला शावक

अतिरिक्त सेल और पांच अतिरिक्त गोलियां अपनी जेब में रख लीं। मैंने राइफल में चार और गोलियां भरीं, तीन मैगज़ीन में और एक ब्रीच में रखी। हालांकि 405 विंचेस्टर राइफल मैगज़ीन में चार गोलियां और एक ब्रीच में रखने के लिए डिज़ाइन की गई है, मैं हमेशा मैगज़ीन में एक गोली कम भरता हूँ ताकि जाम न हो, जो रीलोडिंग के दौरान अंडर-लीवर को बहुत तेज़ी से चलाने पर हो सकता है। आखिर में, मैंने अपने जूते बदलकर हल्के रबर के सोल वाले भूरे रंग के 'खेड़' जूते पहन लिए। ये जूते मुझे हल्के और बिना आवाज़ किए चलने में काफी मदद करेंगे। उस समय मैंने खाकी पैंट और कमीज़ पहनी हुई थी, और मैंने काली कमीज़ पहन ली जो मैं आमतौर पर मचान पर बैठते समय पहनता हूँ।
रंगास्वामी और चरवाहा मेरे साथ एक सूखी नदी तक आए। फिर चरवाहे ने मुझे बताया कि यह नदी लगभग सीधे पश्चिम की ओर बहती है और रास्ते में केवल दो मोड़ लेती है, जहाँ तक पहुँचने पर पैंथर ने शिकार किया था। उसने बताया कि मरी हुई गाय को बाद में नदी के दूसरे मोड़ के ठीक उत्तर दिशा में जंगल के अंदर लगभग दो सौ गज तक घसीटा गया था।
उनके निर्देश काफी स्पष्ट थे और नदी के दो मोड़ों के कारण ही वे इतने सटीक निर्देश दे पाए थे, इसके लिए मैं उनका आभारी था। मैंने उन लोगों को वापस जाने के लिए कहा, क्योंकि मैं अंततः शिवानीपल्ली जाने का अपना रास्ता खुद ही ढूंढ लूंगा, और इस तरह मैंने अपना प्रयास शुरू किया।
मैंने सबसे समझदारी भरा और शांत तरीका यही समझा कि इस सूखी नदी के तल पर चलना, इसके किनारों के ऊपर चलने की बजाय, बेहतर होगा। अनजाने में मेरे द्वारा की गई कोई भी हल्की सी आवाज़ दब जाएगी और पैंथर को कम सुनाई देगी। दूसरा, नदी के तल पर चलने से मैं आसानी से इसके मार्ग का अनुसरण कर सकता था, बिना टॉर्च जलाए यह देखने की ज़रूरत के कि मैं कहाँ जा रहा हूँ, जबकि अगर मैं किनारे पर चलता तो मुझे टॉर्च जलानी पड़ती, जहाँ वनस्पति मुझे रोकती, खासकर इसलिए कि बहुत अंधेरा था और आसमान पूरी तरह से बादलों से घिरा था, बादल तारों को और उनकी हल्की रोशनी को भी पूरी तरह से छिपा रहे थे।
इसलिए मैं बहुत सावधानी से आगे बढ़ा और जल्द ही मुझे नदी का पहला मोड़ महसूस हुआ, जो दक्षिण-पश्चिम दिशा में था। थोड़ी देर बाद नदी फिर से उत्तर की ओर मुड़ने लगी और फिर सीधी होकर पश्चिम की ओर बहने लगी। मैं चरवाहे द्वारा बताए गए दो मोड़ों में से पहला मोड़ पार कर चुका था।
कुछ ही देर बाद सड़क दूसरी बार मुड़ी, लेकिन इस बार उत्तर दिशा में। मैं बहुत सावधानी से आगे बढ़ा ताकि किसी ढीले पत्थर या चट्टान से टकराकर आवाज़ न हो। हालाँकि मुझे जो जानकारी दी गई थी, उससे मुझे पता था कि शिकार अभी भी लगभग तीन सौ गज दूर है, लेकिन पैंथर की सुनने की शक्ति बहुत तेज़ होती है, और अगर मेरा शिकार आस-पास कहीं भी होता, भले ही वह शिकार को खा न रहा हो, तो भी वह मुझे सुन लेता और शायद फिर से भाग जाता।
सौभाग्यवश, नदी के इस हिस्से में लगभग कोई बड़े पत्थर या झाड़ियाँ नहीं थीं, जिससे मुझे चुपचाप आगे बढ़ने में मदद मिली। थोड़ी देर बाद, इसने उत्तर की ओर अपना मोड़ पूरा कर लिया और दक्षिण की ओर मुड़ने लगी। कुछ गज आगे जाकर यह फिर से सीधी हो गई और अपनी मुख्य पश्चिमी दिशा में बहने लगी।
मैं रुक गया। मैं उस जगह पहुँच गया था जहाँ पैंथर ने गाय को मारा था और जहाँ से वह शिकार को घसीटते हुए जंगल में उत्तर दिशा में लगभग दो सौ गज दूर ले गया था। मैं जानता था कि अब मुझे छोटी नदी को छोड़कर घनी झाड़ियों में जाना होगा ताकि शव और हत्यारे को ढूँढ़ सकूँ, जिसे मैं खाते हुए रंगे हाथों

मैंने उनकी मदद करने की नेक मंशा के लिए उन्हें धन्यवाद दिया, लेकिन मन ही मन मैं इस बात से बहुत खुश था कि वे मुझसे मजल-लोडर (बंदूक) उधार लेने में नाकाम रहे। एक अनुभवहीन व्यक्ति के लिए मजल-लोडर एक बेहद घातक हथियार बन सकता है और मैं मानता हूँ कि अगर वे और वह बंदूक मेरे पीछे होते तो मैं बहुत घबरा जाता।
भैंसों का इस्तेमाल न कर पाने के बाद, मैंने शिवानीपल्ली में मौजूद ऐसे ही देहाती कुत्तों के मालिकों का सहयोग लेने की कोशिश की। काफी आनाकानी के बाद, आखिरकार एक अकेली कुतिया मिली। वह दुबली-पतली कुतिया थी, जिसके कान जड़ से कटे हुए थे, पूरी तरह भूरे रंग की थी और उसकी पूंछ बहुत लंबी और मुड़ी हुई थी। वह गाँव के 'आवारा कुत्ते' का एक विशिष्ट उदाहरण थी, जिनके कान बचपन में ही काट दिए गए थे क्योंकि बाद में उन पर और अंदर कीड़े लग जाते। गाँव वालों के लिए यह समझना आसान है कि अपने कुत्तों के कान बचपन में ही काट देना, बाद में समय-समय पर उनमें से सैकड़ों कीड़े निकालने से कहीं कम मेहनत और कम समय लेता है।
एक अजीब संयोग से, इस कुतिया का नाम 'कुश' रखा गया, जिसने मुझे जंगल के दिनों के मेरे पुराने दोस्त* बायरा पुजारी के कुत्ते 'कुश कुश करिया' के नाम की याद दिला दी। मुझे नहीं पता कि यह नाम सलेम जिले के वन क्षेत्रों के कुत्ते पालकों के बीच लोकप्रिय है या यह सिर्फ किसी भी कुत्ते का ध्यान आकर्षित करने के लिए स्वाभाविक रूप से निकलने वाली ध्वनि जैसा लगता है। व्यक्तिगत रूप से, मैं दूसरे विचार की ओर अधिक झुकाव रखता हूँ। जो भी हो, मुझे तब यह नहीं पता था कि यह कुतिया कुश अपने नाम वाले बायरा के कुत्ते की तरह ही बेहद चंचल स्वभाव की होगी।
अंत में, चरवाहे रंगास्वामी, कुश और उसके मालिक के साथ, हम यह पता लगाने के लिए निकल पड़े कि उस पैंथर का क्या हुआ था।
हम पिछली रात के अपने कदमों के निशान पर वापस उसी स्थान पर गए जहां मेरे साथियों ने मुझे छोड़ा था, फिर नदी के दो मोड़ों के साथ-साथ अपने ही पदचिह्नों का अनुसरण किया और अंत में उस स्थान पर उसके उत्तरी किनारे पर चढ़ गए जिसे मैंने पिछली रात चुना था।
उसके बाद मैं राइफल ताने हुए आगे-आगे चल रहा था, कुश मेरे और उसके मालिक के बीच दौड़ रही थी, जो कतार में सबसे पीछे था। हमारे बीच में रंगास्वामी था, और उसके पीछे चरवाहा था।
जैसा कि मुझे पिछली रात ही पता चल गया था, झाड़ियाँ इतनी घनी थीं कि बारह घंटे पहले मैंने जिस रास्ते का अनुसरण किया था, उसका सटीक पता लगाना असंभव था; और दिन का उजाला होने के कारण, मैं उन पेड़ों या झाड़ियों में से किसी को भी पहचान नहीं पा रहा था जिनसे मैं अंधेरे में होकर गुजरा था, हालाँकि मुझे मोटे तौर पर पता था कि मैं किस दिशा में गया था।
चरवाहे को बेशक पता था कि शिकार कहाँ पड़ा है, लेकिन मैं सीधे वहाँ नहीं जाना चाहता था। मेरा इरादा था कि अगर मुमकिन हो तो उस जगह को ढूँढ़ूँ जहाँ मैंने पैंथर पर गोली चलाई थी। मैं कामयाब नहीं हुआ: जो लोग जंगलों में रहे हैं, वे समझ सकते हैं कि दिन के उजाले में एक छोटी सी झाड़ी भी रात के उजाले की तुलना में आकार, आकृति और जगह में कितनी अलग दिखती है। अंधेरा जंगल में वस्तुओं के आकार को बहुत बड़ा कर देता है, उनकी आकृति को बिगाड़ देता है और दिशा के बारे में भ्रम पैदा करता है।
मुझे जो चाहिए था उसे ढूंढने में मदद के लिए, मैंने चरवाहे से कहा कि वह हमें मरी हुई गाय तक ले जाए, जिसे उसने आसानी से ढूंढ लिया। संयोग से, वह

डेनकनिकोट्टा वन बंगले में मैंने खाल उतारी। यह एक नर पैंथर था, सामान्य आकार का, जिसकी लंबाई छह फीट सात इंच थी। काले बालों के नीचे उसके धब्बे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। यह पहला और संयोगवश एकमात्र काला पैंथर था जिसे मैंने कभी मारा था।
काले बालों में धंसे मधुमक्खी के डंकों का पता लगाना मुश्किल था, लेकिन मैंने कर्मचारियों को निकाले गए डंकों की सावधानीपूर्वक गिनती करने को कहा, जिसकी मैंने स्वयं जाँच की। निकाले गए डंकों की संख्या से पुष्टि हुई कि उस जानवर में 273 डंक थे। निश्चित रूप से और भी कई डंक रहे होंगे जो हमारी नज़र से बच गए।
मैंने उन लोगों को उनकी सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया और मधुमक्खियों द्वारा किए गए दंड की भरपाई करते हुए बैंगलोर लौट आया—क्योंकि मेरे पास एक काले पैंथर की खाल थी, जो कि बहुत ही दुर्लभ वस्तु है—और मेरे पास कुश नाम का एक अद्भुत बुद्धिमान कुत्ता था, जिसे मैंने उसके मालिक से सात रुपये में खरीदा था।
एक बात मैं बताना लगभग भूल ही गया था। आपको याद होगा कि अनेकल वंका नदी में जहाँ पैंथर पानी पीने के लिए रुका था, वहाँ मुझे खून के दो अलग-अलग निशान मिले थे। उनमें से एक में दूसरे की तुलना में ज़्यादा खून बह रहा था, और क्योंकि मैंने सिर्फ़ एक गोली चलाई थी, इसलिए उस समय मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ था। अब कारण बिल्कुल स्पष्ट हो गया है। मेरी एक गोली, जो आँखों के बीच में लगी थी, निशाने से चूक गई, कनपटी और कान को पार करते हुए जानवर के जांघ में जा धँस गई। दूसरा घाव ही था जिससे बहुत ज़्यादा खून बह रहा था। पहला घाव सिर्फ़ ऊपरी तौर पर था। ज़ाहिर है, उस रात जब मैंने गोली चलाई थी, तब पैंथर उछलने के लिए थोड़ा मुड़ा और झुक गया था, और मैंने ठीक समय पर गोली चलाई थी।
गुफा में चलाई गई दो गोलियों में से एक (पहली) पैंथर की छाती में लगी थी, और दूसरी, जब पैंथर मेरी ओर फिसल रहा था, तो उसके खुले मुंह में घुस गई और गर्दन के पिछले हिस्से से बाहर निकल गई।

* नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग (एलन एंड अनविन, लंदन) देखें। * नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग (एलन एंड अनविन, लंदन) देखें।

पाँच

सांप और अन्य जंगली जीव भारतीय जंगलों के जानवरों के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, जो उन लोगों के लिए बेहद दिलचस्प है जिनके लिए किसी भी प्रकार का जानवर और कोई भी जंगल एक गुप्त आकर्षण का स्रोत होता है। डनबर-ब्रैंडर, चैंपियन, ग्लासफर्ड, बेस्ट, कॉर्बेट और कई अन्य जैसे प्रख्यात लेखकों ने इस क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई है और इन जानवरों की आदतों को अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर दर्ज किया है। इनमें से कुछ ने लगभग पचास साल पहले लिखा था, उस समय, यह याद रखना महत्वपूर्ण है, भारतीय प्रायद्वीप के जंगल शिकार, विशेष रूप से मांसाहारी जानवरों से भरे हुए थे। उनके लेखन की हमेशा सराहना की गई है, लेकिन अब जाकर उनके महत्वपूर्ण कार्यों का वास्तविक आंतरिक मूल्य सामने आ रहा है, और यह कहना उचित होगा कि जैसे-जैसे वर्ष बीतते जाएंगे और भारत का वन्य जीवन अतीत की बात बन जाएगा, इन महान व्यक्तियों के अभिलेखों का महत्व लगातार बढ़ता जाएगा, जो भावी पीढ़ियों के लिए ऐसे ज्ञान को संरक्षित करेंगे जिसे कोई धन-दौलत कभी नहीं खरीद सकती।
यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि भारत के शिकारी और यहाँ तक कि अफ्रीका के महान श्वेत शिकारी, जिन्होंने अपने करियर की शुरुआत ट्रॉफी इकट्ठा करने वाले या, बाद के मामले में, पेशेवर के रूप में की थी, अपने जीवनकाल में उन वन्य जीवों के प्रति प्रेम विकसित करते रहे, जिनका वे कभी शिकार करते थे और जिन्हें वे अपने बल्ले से सजाते थे। उनमें से अधिकांश ने शिकार करने की आदत को त्यागकर वन्य जीवों की फोटोग्राफी और प्रकृति के अध्ययन की अधिक सार्थक लेकिन कठिन कला को अपनाया।
आरंभिक वर्षों में शिकार के लिए जंगल में प्रवेश करना एक बेहद जोखिम भरा कार्य माना जाता था। जानवरों से होने वाले खतरों के अलावा, जिन्हें बहुत अधिक माना जाता था, विभिन्न विषैले सांपों, बिच्छुओं, मकड़ियों और अन्य जीवों का खतरा भी था, साथ ही मलेरिया, काला पानी बुखार आदि जैसी जंगली बीमारियों से स्वास्थ्य को भी खतरा था।
उदाहरण के लिए, मेरे पिता के ज़माने में नीलगिरी पर्वतमाला की तलहटी में स्थित जंगलों की यात्रा, या मैसूर राज्य के शिमोगा और कादुर ज़िलों के घने जंगलों की यात्रा, या पश्चिमी घाट के आसपास के इलाकों की यात्रा, बहुत जोखिम भरी मानी जाती थी। सुबह-सुबह इन इलाकों को ढकने वाले कोहरे को ब्रोंकाइटिस, निमोनिया और विशेष रूप से मलेरिया का प्रत्यक्ष कारण माना जाता था। कहा जाता था कि जंगल के जानवर बेहद निडर और डरावने होते हैं। इसके विपरीत, प्राचीन लेखकों ने हमें दिखाया है कि जंगली जीव स्वभाव से आक्रामक नहीं थे, और लगभग बिना किसी अपवाद के वे मानव जाति से भयभीत रहते थे। विज्ञान ने हमें यह सिखाया है कि भारत में कोई जहरीली मकड़ी, छिपकली या मेंढक नहीं पाए जाते हैं और केवल कुछ ही प्रकार के जहरीले सांप मिलते हैं; साथ ही यह भी कि ब्रोंकाइटिस और निमोनिया कहीं भी हो सकते हैं, यहाँ तक कि भारत के सबसे गर्म और शुष्क शहरों में भी। सर रोनाल्ड रॉस ने दिखाया है कि मलेरिया परजीवी को मच्छर की एक विशेष प्रजाति ले जाती है, न कि जंगलों की नम धुंध और हवा। यह परजीवी न केवल जंगलों में बल्कि पूरे देश में पाया जाता है। मलेरिया फैलाने वाला मच्छर रुके हुए पानी और गंदी नालियों में पनपता है, और ऐसे स्थान बड़े से बड़े शहरों में भी बहुतायत में पाए जाते हैं। अधिकारियों द्वारा चलाए गए अभियानों और उपायों ने इन समस्याओं को काफी हद

आम भारतीय कोबरा इतना प्रसिद्ध है कि इसके बारे में ज़्यादा बताने की ज़रूरत नहीं है। प्रचलित कहानियों के विपरीत, इसकी लंबाई शायद ही कभी छह फीट से ज़्यादा होती है। भारत में इसकी दो किस्में पाई जाती हैं: पहली, जिसमें व्यापक रूप से चर्चित 'वी' आकार का निशान होता है, जिसे 'बायोसेलेट' किस्म कहा जाता है, और दूसरी, जिसके फन पर केवल एक सफेद धब्बा होता है, जिसके चारों ओर काला घेरा होता है। इसे 'मोनोसेलेट' किस्म के नाम से जाना जाता है। कहीं-कहीं ऐसे नमूने भी देखने को मिलते हैं जिनमें कोई निशान नहीं होता, हालांकि उनका फन भी उतना ही विकसित होता है।
कोबरा की पहचान के लिए रंग एक बहुत ही अविश्वसनीय तरीका है, क्योंकि ये गहरे काले से लेकर विभिन्न प्रकार के भूरे और यहाँ तक कि लाल, सफेद या हरे रंग के भी पाए जाते हैं। भूरा और धूसर रंग सबसे आम हैं। यहाँ तक कि नवजात कोबरा, जब वे अंडे से निकलते हैं और मात्र छह इंच लंबे होते हैं, तब भी बेहद विषैले होते हैं। अपने जीवन के पहले दो वर्षों में वे कहीं अधिक आक्रामक होते हैं। उम्र बढ़ने के साथ-साथ उनका स्वभाव शांत हो जाता है, और बहुत बूढ़े कोबरा बिना अत्यधिक उकसावे के काटते नहीं हैं। इस उम्र में, जब उनके दांत और विष की थैली पूरी तरह से मौजूद होते हैं, तब उन्हें पूरी तरह से वश में किया जा सकता है।
कोबरा लगभग पंद्रह नरम खोल वाले अंडे देते हैं, जिनमें से प्रत्येक कबूतर के अंडे के आकार का होता है। ये अंडे उथले गड्ढे में या सड़ते हुए पत्तों के बीच में दिए जाते हैं। इन अंडों को सफलतापूर्वक सेने के लिए सूर्य की अप्रत्यक्ष गर्मी और पर्याप्त नमी की आवश्यकता होती है। नमी के बिना ये अंडे सिकुड़ जाते हैं।
करैत सांप की औसत लंबाई लगभग तीन फीट होती है और यह पतला, काला सांप होता है जिसके शरीर पर सफेद छल्ले होते हैं। यह बहुत फुर्तीला होता है, लेकिन साथ ही बहुत शर्मीला और घबराया हुआ भी होता है और आमतौर पर पकड़े जाने के एक या दो दिन के भीतर ही बिना किसी स्पष्ट कारण के मर जाता है।
किंग कोबरा, कोबरा और करैत को 'कोलुब्राइन' सांपों के रूप में जाना जाता है, और इनका जहर पूरे तंत्रिका तंत्र को ध्वस्त कर देता है, जो इसका प्राथमिक लक्षण है। इन सभी के दो स्थिर दांत होते हैं, जिनमें से सामान्य कोबरा के दांत की लंबाई लगभग एक चौथाई इंच, हैमाड्रायड के दांत की लंबाई लगभग आधा इंच और करैत के दांत की लंबाई लगभग एक-आठवां इंच होती है।
‘विशालकाय’ साँपों में रसेल वाइपर और सॉ-स्केल्ड वाइपर शामिल हैं। इनके भी दो नुकीले दाँत होते हैं, एक-एक दोनों तरफ। इस्तेमाल न होने पर ये मुँह के पिछले हिस्से से चिपके रहते हैं, लेकिन इन्हें खड़ा किया जा सकता है और इनके आधार को अक्ष मानकर घुमाया जा सकता है। एक बड़े रसेल वाइपर के दाँत पूरे एक इंच तक बढ़ते हैं और नरम चमड़े के जूते, पुट्टी, पैंट या मोटे ऊनी मोजे को भी छेद सकते हैं। कोबरा या करैत के दाँत स्थिर होते हैं और घूम नहीं सकते, इसलिए ऐसा नहीं कर सकते। रसेल वाइपर खुद एक मजबूत साँप है जिसकी लंबाई पाँच फीट से थोड़ी अधिक होती है और इसकी पीठ पर हीरे के आकार के निशानों की तीन पंक्तियाँ होती हैं (एक बीच में और एक-एक दोनों तरफ), जो एक श्रृंखला की तरह आपस में जुड़ी होती हैं और गहरे भूरे रंग की होती हैं। इसी कारण इसे कभी-कभी ‘चेन-वाइपर’ भी कहा जाता है।
आरी के आकार का तना मुश्किल से दो फीट से अधिक लंबा होता है और यह भूरे रंग का सांप होता है जिसकी पीठ पर सफेद धारियां होती हैं। इसकी विशिष्ट विशेषता इसकी खुरदरी, उभरी हुई खाल है। जब यह उत्तेजित होता है, तो यह अपने

8:30 बजे तक उसकी मृत्यु हो गई। मैंने वन रक्षक को उसके रिश्तेदारों और पेन्नाग्राम पुलिस को सूचित करने के लिए भेजा। रिश्तेदार दोपहर 2 बजे तक बैलगाड़ी में आए और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। फिर पुलिस आई। वे जानना चाहते थे कि जिस वन बंगले में हम उस आदमी को घुमाने ले गए थे, उसके फर्श पर खून के निशान क्यों थे; मैंने उसे क्यों काटा था; उसकी मृत्यु क्यों हुई। अंत में शव को बैलगाड़ी में डालकर पुलिस स्टेशन ले जाया गया और मुझे भी साथ चलने के लिए कहा गया। मैंने साफ इनकार कर दिया। मुख्य कांस्टेबल ने मेरे इनकार पर कुछ देर विचार किया और फिर समझौता करते हुए मुझे निर्देश दिया कि मैं शव परीक्षण की रिपोर्ट आने तक वन बंगले में ही रहूँ। मैंने तुरंत सहमति दे दी। फिर दल सात मील दूर स्थित पेन्नाग्राम के लिए रवाना हुआ, जहाँ से शव को बस द्वारा बयालीस मील दूर स्थित सलेम कस्बे के जनरल अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। तीन दिन बाद रिपोर्ट आई। गाड़ीवान की मौत कोबरा के काटने से हुई थी। चौथे दिन पुलिस ने मुझे सूचित किया कि अब मुझ पर कोई संदेह नहीं है।
पिछले उनतीस वर्षों में, जब से मैं साँपों को संभाल रहा हूँ, मुझे केवल एक बार साँप ने काटा है, और वह भी एक कोबरा ने। यह घटना 1939 में घटी थी। मैंने साँप को पकड़ा ही था कि वह मेरे हाथ से फिसल गया और मेरे बाएँ हाथ की दूसरी उंगली पर काट लिया। लेकिन मैं अभी भी जीवित हूँ; न तो मुझे अपनी उंगली को विस्फोट से उड़ाना पड़ा और न ही काटना पड़ा। सौभाग्य से, यह घटना मेरी ज़मीन पर हुई, जो बैंगलोर से नौ मील दूर है, और मैं अपनी कार से अस्पताल पहुँच सका और विष रोधी दवा का इलाज करवा सका। परिणामस्वरूप, साँप के काटने से कोई अप्रिय लक्षण नहीं हुए; लेकिन इंजेक्शन से ज़रूर हुए, क्योंकि तीसरे दिन मुझे बहुत गंभीर प्रतिक्रिया हुई और मेरे दोनों पैर अस्थायी रूप से आंशिक रूप से लकवाग्रस्त हो गए। हालाँकि, कैल्शियम और अन्य इंजेक्शनों से एक दिन के भीतर ही सब ठीक हो गया।
अंत में, मैं दक्षिण भारत में प्रचलित एक विचित्र मान्यता का उल्लेख करना चाहूंगा, जिसके अनुसार मद्रास शहर से कुछ ही दूरी पर स्थित दक्षिणी रेलवे के पोलरेड्डीपालयम स्टेशन पर कार्यरत नरसिया नामक एक स्टेशन मास्टर किसी भी व्यक्ति को जहरीले सांप के काटने से ठीक कर सकते थे, बशर्ते उन्हें टेलीग्राम द्वारा सूचना दी जाए। यह मान्यता इतनी व्यापक हो गई थी कि रेलवे अधिकारियों ने अपने टेलीग्राफ सिस्टम पर इस स्टेशन मास्टर को संबोधित किसी भी संदेश को प्राथमिकता दी। मैंने प्रामाणिक स्रोतों से उनके चमत्कारी उपचारों के कई किस्से सुने हैं, और आज दक्षिण भारत में सैकड़ों लोग जीवित हैं जिनकी जान उन्होंने बचाई थी। कार्यप्रणाली यह थी कि जैसे ही श्री नरसिया को किसी के काटे जाने की सूचना वाला टेलीग्राम मिलता, वे स्टेशन प्रांगण में उगने वाले एक विशेष पेड़ के पास जाते, अपनी धोती या लंगोटी का एक टुकड़ा फाड़कर पेड़ की एक शाखा से बांधते, प्रार्थना करते और फिर उत्तर में एक टेलीग्राम भेजकर पीड़ित को सूचित करते कि यदि वह तंबाकू, शराब और कॉफी से परहेज करे तो वह जीवित रहेगा। हमेशा पीड़ित बच जाता था। अफसोस! श्री नरसिया को स्वयं ईश्वर की शरण में जाना पड़ा और वे अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन उन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। मुझे नहीं पता कि उनका रहस्य उनके साथ ही समाप्त हो गया या नहीं, लेकिन मुझे आशंका है कि ऐसा ही हुआ है, क्योंकि तब से मुझे सांप के काटने के उपचार के क्षेत्र में उनके काम को आगे बढ़ाने वाले किसी उत्तराधिकारी के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है।

छह

हैदराबाद का हत्यारा ब्रिटिश राज के दिनों में, मैसूर राज्य के उत्तर में बेल्लारी, अनंतपुर, कुरनूल और नंदीयाल जिले स्थित थे, जो पूर्व मद्रास प्रेसीडेंसी के अंतर्गत आते थे। इनके उत्तर में हैदराबाद राज्य था, जो हैदराबाद के निज़ाम के अधीन था। निज़ाम ब्रिटिश शासन के कट्टर सहयोगी थे और दिल्ली के कभी सर्वशक्तिमान रहे मुगल सम्राट के वंशज थे।
हैदराबाद राज्य अब अस्तित्व में नहीं है और निज़ाम के विशाल साम्राज्य के कुछ हिस्से अनंतपुर, कुरनूल और नंदीयाल के साथ मिलकर आंध्र प्रदेश के भाषाई तेलुगु राज्य का एक हिस्सा बन गए हैं, जो नए भारत संघ में लगभग दूसरा सबसे बड़ा राज्य है, क्षेत्रफल में यह उत्तर में स्थित मध्य प्रदेश से ही छोटा है।
हालांकि, यह कहानी बहुत पहले की है जब ये क्षेत्र, हालांकि मुख्य रूप से तेलुगु भाषी थे, मद्रास के अंतर्गत आते थे।
उन दिनों ये जिले काफी हद तक अविकसित थे क्योंकि यहाँ वर्षा कम होती थी, साल के दस महीने भीषण गर्मी पड़ती थी (बाकी दो महीने बस असहनीय गर्मी होती थी) और जनसंख्या घनत्व भी न के बराबर था। अनंतपुर, कुरनूल और नंदीयाल कस्बों को छोड़कर, जिनके नाम पर उन जिलों का नाम पड़ा जिनकी वे राजधानियाँ थीं, बाकी का इलाका छोटे-छोटे गाँवों से आबाद था जो दूर-दूर तक फैले हुए थे।
बंबई से मद्रास तक जाने वाली रेल लाइन जिलों को जोड़ने वाली प्रमुख मार्ग थी। यह गुंटकल जंक्शन नामक रेलवे कॉलोनी से होकर गुजरती थी। यह मुख्य मार्ग ब्रॉड गेज का था, जिसकी पटरियों के बीच 5 फीट 6 इंच की दूरी थी। गुंटकल से तीन अलग-अलग मीटर गेज की धाराएँ निकलती थीं। एक पश्चिम की ओर बेल्लारी और हुबली की ओर जाती थी; दूसरी दक्षिण की ओर मैसूर राज्य के बैंगलोर की ओर जाती थी; तीसरी पूर्व की ओर द्रोणचेल्लम और नंदीयाल से होते हुए बेजवाड़ा तक जाती थी, और फिर वहाँ से भारत के पूर्वी तट तक पहुँचती थी। बेजवाड़ा में यह मद्रास और कलकत्ता को जोड़ने वाली एक अन्य ब्रॉड गेज मुख्य धारा से जुड़ती थी, जबकि द्रोणचेल्लम में एक मीटर गेज लाइन उत्तर-पूर्व की ओर सिकंदराबाद और हैदराबाद की ओर मुड़ जाती थी। मीटर गेज के इंजन और रोलिंग स्टॉक ब्रॉड गेज लाइनों की तुलना में स्वाभाविक रूप से छोटे और काफी हल्के होते थे।
गुंटकल, द्रोणाचेल्लम और नंदीयाल से आगे बढ़ते हुए, पूर्वी मीटर-गेज लाइन पांच स्टेशनों तक वन क्षेत्र से होकर गुजरती है, जिनके नाम क्रमशः गज़ुलापल्ली, बसवपुरम, चेलामा, बोगारा और दिगुवमेटा हैं, और फिर बेज़वाड़ा की ओर जाती है। यह वन क्षेत्र, जो मेरी कहानी का आधार है, लगभग उस जंगल पट्टी के बीचोंबीच स्थित है जो उत्तर की ओर कृष्णा नदी के पार पूर्व हैदराबाद राज्य तक और दक्षिण की ओर कडप्पा शहर तक फैली हुई है।
मीटर गेज की ट्रेनें धीमी होती हैं, और रात में गुजरने वाली ऊपर और नीचे जाने वाली मेल ट्रेनों के ड्राइवरों के लिए यह अभी भी एक आम अनुभव है कि इंजन की हेडलाइट की रोशनी में जंगली जानवर पटरियों को पार करते हुए दिखाई देते हैं, या अंतिम समय में पार करने की कोशिश करने वाले जंगली सूअर या हिरण को कुचल देते हैं।

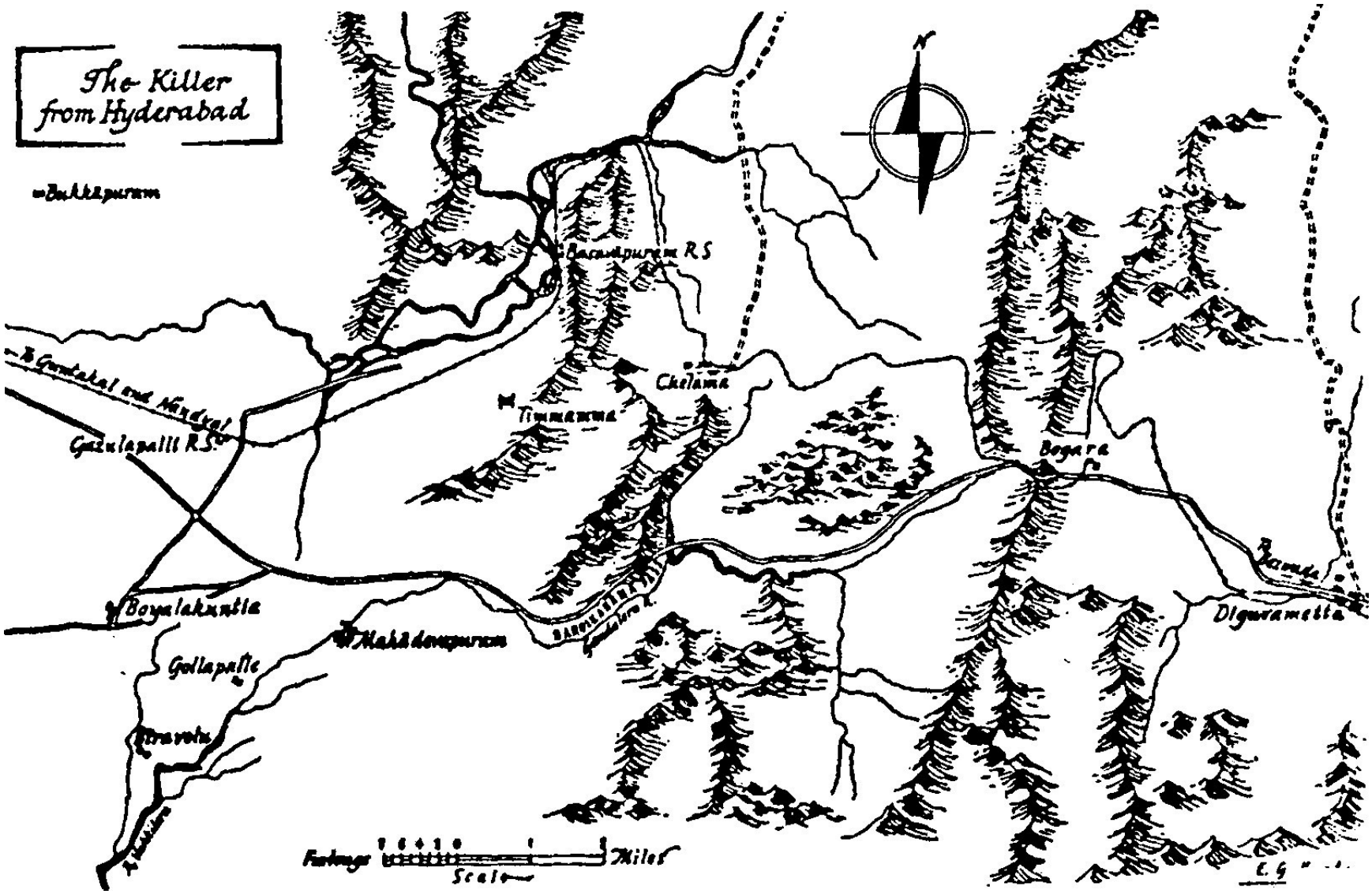
The Killer from Hyderabad
Bukkapuram
Basavapuram R.S
Chelama
Timmapuram
Gazulapalli R.S.
Bogara
Janda
Digaramatta
Boyalakuntla
Mahadevapuram
Gollapalle
Furlongs
Miles
Scale

रहा था। उसने यह भी बताया कि अगर मैं चीतल या सांभर हिरण, या जंगली सूअर का शिकार करना चाहूँ, तो वे इस स्टेशन के आसपास की तुलना में दिगुवामेटा के आसपास अधिक संख्या में मिलते हैं।
मैंने श्री रॉजर्स को उनकी जानकारी के लिए धन्यवाद दिया और उनसे कहा कि बाघ को ठिकाने लगाने के बाद मैं हिरण का शिकार करने पर विचार करूँगा। उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया, स्टेशन मास्टर से 'लाइन-क्लियर' टोकन लिया, हमें अलविदा कहा और अपने इंजन की ओर चले गए। एक मिनट बाद ही उसकी तीखी सीटी ने सन्नाटा तोड़ दिया, और ज़ोरदार आवाज़ और खड़खड़ाहट के साथ मालगाड़ी आगे बढ़ गई, मोड़ से गुज़रते ही पीछे की लाल बत्ती नज़र से ओझल हो गई। एक बार फिर स्टेशन पर सन्नाटा छा गया।
तभी नंदीयाल से टेलीग्राम द्वारा जवाब आया, जिसमें चेलामा स्टेशन पर खड़ी ट्रॉली के उपयोग के लिए पी.डब्ल्यू.आई. की सहमति व्यक्त की गई थी।
स्टेशन मास्टर ने प्रतीक्षाकक्ष खोला। मैंने माचिस जलाकर छत से लटक रही इकलौती तेल की बत्ती जलाई। बाला मेरी राइफल, पलंग, पानी की बोतलें और टिफिन की टोकरी लेकर आया। बाथरूम में पानी नहीं था, और बालासुब्रमण्यम से पानी मंगवाने का अनुरोध करने में बहुत देर हो चुकी थी। कमरे में कोई बिस्तर भी नहीं था, बस एक मेज, दो बिना भुजाओं वाली कुर्सियाँ और एक बीच में छेद वाली कुर्सी थी। कम से कम सिर पर छत तो थी, इस बात से मैं संतुष्ट था। मैंने बत्ती बुझाई और कुर्सी की ओर बढ़ा। मेरा आधा पिछला हिस्सा बेंत के तले में बने छेद में धंस गया, लेकिन बाकी का हिस्सा ऊपर ही रहा। मैंने अपने जूते उतारे, कुर्सी पर लेट गया, सावधानी से अपने पैर उठाकर टांगों को सहारा देने वाले स्टैंड पर रखे, और मुझे पता भी नहीं चला कि मैं सो गया।
लगभग 4:30 बजे एक और मालगाड़ी गुजरी। उसके बाद मैं फिर सो गया, लेकिन कुछ ही मिनटों बाद बाला कमरे में आया और मुझे धीरे से पुकारा। मैं जागा तो देखा कि उजाला हो चुका था। मुझे पता चला कि बालासुब्रमण्यम कुछ घंटे आराम करने के लिए अपने क्वार्टर में गए थे; इसलिए, जब बाला मेरे निर्देशों पर प्लेटफार्म के अंत में तीन पत्थर लाने, कुछ लकड़ियाँ ढूँढ़ने और मेरी यात्रा केतली में चाय बनाने के लिए आग जलाने में व्यस्त हो गए, तो मैंने अपना छोटा फोल्डिंग प्राइमस स्टोव निकाला, उसे जलाया और कुछ बेकन तल लिया। बेकन खत्म होने तक चाय का पानी अभी उबल भी नहीं पाया था, इसलिए मैं प्लेटफार्म के दूसरे छोर पर स्थित 'पानी के स्तंभ' की ओर चला गया, जो प्यासे इंजनों को पानी की आपूर्ति करता था। मैं अपने साथ तौलिया, टूथब्रश, टूथपेस्ट, साबुन और कपड़े ले गया था। इन वस्तुओं को पानी के स्तंभ से कुछ दूरी पर रखकर, मैंने अपने सारे कपड़े उतार दिए और तौलिये को अपनी कमर के चारों ओर बाँध लिया। फिर मैं चमड़े की नली के नीचे गया और एक हाथ से पहिया घुमाकर वाल्व खोला और पास ही स्थित चार पत्थर के खंभों पर खड़े दस हजार गैलन के ऊंचे टैंक से पानी खंभे में बहने लगा। अचानक मुझ पर जो पानी गिरा, वह इतना ज़बरदस्त था कि मैं लगभग गिर ही गया। फिर भी, मैंने अपने नहाने का आनंद लिया और इसे अपनी सुबह की ब्रश करने की दिनचर्या के साथ मिला लिया। हालाँकि मैं आमतौर पर जंगलों में दाढ़ी नहीं बनाता, लेकिन साफ़-सुथरा रहना और तरोताज़ा महसूस करना बहुत ज़रूरी है। मेरे पास खुद को सुखाने के लिए दूसरा तौलिया नहीं था, क्योंकि मेरी कमर पर लिपटा तौलिया गीला था, लेकिन इसकी कोई परवाह नहीं थी, क्योंकि सुबह बिल्कुल भी ठंडी नहीं थी। कुछ ही मिनटों में मैं सूखे कपड़े पहनकर बाला वापस चला गया, जहाँ केतली में पानी उबल रहा था। चाय, बेकन और बैंगलोर से लाई गई चपातियों के बचे हुए टुकड़े,

'पुट्टू-राइस' एक विशेष किस्म के चावल के साबुत दानों से। ये मद्रास की खासियत हैं, और उस सुबह मेरे सामने इनकी मौजूदगी से यह संकेत मिला कि मेरे नए दोस्त और मेज़बान यूसुफ निस्संदेह उसी शहर से आए थे। यह एक स्वादिष्ट और बेहद सुखद भोजन साबित हुआ।
फिर मैंने घर की दीवार से सटाकर बनाए गए उस विशेष स्थान में ठंडे पानी से स्नान किया, जिसकी तीनों भुजाएँ लगभग पाँच फुट चौड़ी बाँहों की चटाइयों से बनी थीं। वहाँ कोई छत नहीं थी।
जब मैं कपड़े पहन रहा था, तब जोसेफ तैयार होकर इंतज़ार कर रहा था। फिर हम उन दो चारे के पास गए जिन्हें हमने एक दिन पहले बांधा था। हमारे साथ जोसेफ के अधीन काम करने वाले वन रक्षक भी थे, जिन्हें उसने इन जानवरों को खिलाने- पिलाने की ज़िम्मेदारी सौंपी थी। दोनों चारे जीवित थे और उन्हें किसी ने छुआ नहीं था।
अब मेरे पास आगे की स्थिति का इंतज़ार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। इलाका इतना विशाल था कि बाघ को संयोग से देख पाने की उम्मीद में जंगल में लंबी पैदल यात्रा करना व्यर्थ था। बाघ दिगुवामेटा और गज़ुलापल्ली के बीच कहीं भी हो सकता था, जो सत्ताईस मील दूर था, और उसकी खोज करना समय और ऊर्जा की बर्बादी होती। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, अब तक मेरा किसी भी बाघ से कोई संपर्क नहीं हुआ था, लेकिन मैंने काफी मेहनत की थी, और मुझे उम्मीद है कि कुछ ही समय में मुझे उसका फल मिलेगा।
और एक बार शुरू हो जाने के बाद, वाकई घटनाएँ घटने लगीं। अगली सुबह लगभग नौ बजे टेलीग्राफ की तारें बज उठीं जब बसावपुरम के स्टेशन मास्टर मसिलमोनी ने खबर दी कि पिछली रात मेरे चारे को किसी ने मार डाला था। यह सूचना पाकर मैं बहुत उत्साहित नहीं हुआ, क्योंकि आपको याद होगा कि यही वह जगह थी जहाँ मुझे पानी के गड्ढे के पास ताज़े तेंदुए के पदचिह्न मिले थे, और मैंने जानबूझकर अपने चारे को कुछ दूरी पर बाँध दिया था ताकि संभव हो तो वह उस तेंदुए की पहुँच से दूर रहे।
मैंने दिगुवामेटा के स्टेशन मास्टर से मसिलमोनी से बात करने और वन रक्षक किट्टू से पूछताछ करने के लिए कहा, ताकि पता चल सके कि मेरे चारे को बाघ ने खाया था या तेंदुआ ने। कुछ ही देर में जवाब आ गया; मसिलमोनी ने बताया कि जब वह संकेत दे रहे थे, किट्टू उनके बगल में टेलीग्राफ उपकरण पर था। किट्टू ने बताया कि चारे को तेंदुआ ने मार डाला है और मुझे सलाह दी कि मैं आकर उसे गोली मार दूं, क्योंकि अन्यथा मेरे द्वारा बांधे गए अन्य चारे भी इस जानवर के हाथों उसी भाग्य का शिकार हो जाएंगे।
यह तर्कसंगत था। साथ ही, मेरे पास उस क्षेत्र के लिए नियमित शिकार लाइसेंस नहीं था, बल्कि मैं केवल आदमखोर पैंथर का शिकार करने के विशेष अनुरोध पर आया था, और कुछ नहीं। यह अनुरोध सीधे मद्रास के मुख्य वन संरक्षक ने किया था, जिन्होंने मेरी यात्रा के लिए परमिट जारी किया था। मैंने तय किया कि मैं बाद में मुख्य वन संरक्षक को पत्र लिखकर पैंथर को मारने का कारण समझाऊंगा, और किसी भी आपत्ति की स्थिति में शिकार लाइसेंस शुल्क का भुगतान करने की पेशकश करूंगा। इसलिए मैंने मसिलमोनी के बुलावे का जवाब देने का निश्चय कर लिया।
दिन के समय बसवपुरम की ओर कोई यात्री ट्रेन नहीं थी, लेकिन सौभाग्य से उसी सुबह लगभग ग्यारह बजे एक मालगाड़ी वहाँ से गुजरने वाली थी। स्टेशन मास्टर ने मेरे लिए ट्रेन रोक दी और मैं गार्ड के डिब्बे में बैठकर बसवपुरम चला गया। जोसेफ ने मेरे साथ जाने की जिद की।

जैसे ही उजाला हुआ और दिखाई देने लगा, मैं खोखले पेड़ से बाहर निकला और बाहर ज़मीन पर बैठ गया। क्या आपने कभी तेरह घंटे तक लगातार पूरी रात खड़े रहने की कोशिश की है? कभी खुद करके देखिए।
लगभग पंद्रह मिनट तक, जब रोशनी तेज़ हुई, मैं आराम करता रहा। फिर मैं यह देखने के लिए उठा कि क्या दिखाई दे रहा है। बाघ के खाने के दौरान, मैंने खुद को टहनियों और पत्तों से मुक्त करने और पेड़ से बाहर निकलने में जो समय लगाया, वह शायद दस मिनट से ज़्यादा नहीं रहा होगा—ज़्यादा से ज़्यादा पंद्रह मिनट—लेकिन बाघ उस मृत महिला का आधे से ज़्यादा हिस्सा खा चुका था। उसका सिर और हाथ शरीर से अलग होकर घास पर बिखरे पड़े थे। एक जांघ और एक टांग भी वहीं थी, और दूसरे पैर का कुछ हिस्सा भी। बाकी का शरीर गायब था, सिवाय कुतरे हुए रीढ़ की हड्डियों के, जिनमें कुछ पसलियों की हड्डियाँ अभी भी जुड़ी हुई थीं।
जहां आदमखोर ने पीड़ा में जमीन को रौंद डाला था, वहां की ज़मीन फटी हुई थी। फिर वह कुछ गज दूर झाड़ियों में कूद गया। वहां झाड़ियों के तने कटे हुए थे और पत्तियां उसके खून से सनी हुई थीं। यही वह जगह थी जहां से मैंने उसकी दहाड़ और उत्पात की आवाज सुनी थी, जब मैं खोखले पेड़ में दुबका हुआ था। वहां से खून का निशान जंगल में दूर चला गया। मैंने कुछ गज तक उसका पीछा किया और पाया कि वह लगभग उत्तर दिशा की ओर जा रहा था। मैं अपेक्षाकृत सुरक्षित रूप से झोपड़ी में लौट सकता था।
मैंने वैसा ही किया। बाला और पहरेदारों ने झोपड़ी से गोलीबारी की आवाज़ सुनी थी, जहाँ वे जागते हुए लेटे हुए थे। उजाला होते ही वे लगभग एक फर्लांग आगे बढ़ गए थे और मेरा इंतज़ार कर रहे थे। दरअसल, चेन्चू लोग उस सूखे पेड़ तक आ जाते, लेकिन अली बेग ने उन्हें आगाह किया कि मैंने शायद बाघ को सिर्फ़ घायल किया हो और पता नहीं वह कहाँ छिपा होगा।
मैंने उन्हें उस भयानक रात में घटी सारी घटनाएँ बताईं।
मेरी घड़ी में सुबह के 6:25 बज रहे थे। मैंने बाघ पर पिछली रात करीब 8:30 बजे गोली चलाई होगी—दस घंटे पहले। मैंने सोचा, अब तक तो वह मर चुका होगा। या फिर, अगर मरा नहीं तो इतना खून बह गया होगा और ज़ख्मों से उसका शरीर इतना अकड़ गया होगा कि वह कहीं बुरी हालत में पड़ा होगा। मैं खून के निशान का पीछा करने से खुद को रोक नहीं पाया।
अली बेग निहत्था था, इसलिए मैंने उससे झोपड़ी में वापस जाकर हमारा इंतज़ार करने को कहा। उसने जवाब दिया कि उसे वहाँ अकेले रहने से डर लग रहा है और वह हमारे साथ चलना और जोखिम उठाना ज़्यादा पसंद करेगा। इसलिए हम वापस उस सूखे पेड़ के पास लौट गए।
मैंने बाला से कहा था कि मैं ऐसा करना नहीं चाहता था, लेकिन मजबूरी में मुझे बाघ को उसकी पत्नी का शव खाने देना पड़ा ताकि उसका ध्यान भटका सकूँ और मैं छलावरण में लगी लकड़ियों और लताओं से खुद को मुक्त कर सकूँ। उसने तब मेरी बात मान ली थी। लेकिन जब हम पेड़ के पास पहुँचे और उसने उस बेचारी औरत के क्षत-विक्षत अवशेष देखे, तो उसे गहरा सदमा लगा। वह छोटा सा आदमी पूरी तरह टूट गया और फूट-फूट कर रोने लगा।
उसने कहा कि जब तक वह शव का अंतिम संस्कार नहीं कर देता, तब तक वह आगे नहीं बढ़ेगा। हम दोनों वन रक्षकों ने उसे वहीं पर यह काम शुरू करने से रोकने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी। वास्तव में, यह कहना मुश्किल है कि अगर अली बेग ने उसे साफ-साफ न कहा होता कि हम सब, और विशेष रूप से वह, स्थानीय पुलिस के शिकंजे में आ जाएंगे, तो हम सफल हो पाते। पुलिस घटना की रिपोर्ट मांगेगी,

और मेरी भावनाओं को शांत करने के लिए इससे अधिक कुछ भी कोई व्यक्ति नहीं कह सकता था। मुझे अच्छा लगा और मैंने बालासुब्रमण्यम को उनके कहे शब्दों और मेरे प्रति उनके द्वारा दिए गए सभी सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। उनकी सरल प्रशंसा मेरे द्वारा प्राप्त की गई सबसे अच्छी प्रशंसाओं में से एक थी। मैं एक और सप्ताह तक गज़ुलापल्ली में ही रहा, लेकिन आदमखोर के बारे में मुझे कोई और खबर नहीं मिली। दिगुवामेटा में एक पैंथर ने मेरे एक शिकार को मार डाला। मैं इसकी पुष्टि करने वहाँ गया और यह सच साबित हुआ। जब मैंने पैंथर को उसी रात फिर से खाने के लिए शिकार के अवशेष छोड़ दिए, तो जोसेफ बहुत खुश नहीं हुआ।
उस सप्ताह के अंत में मैंने अपने उन सभी नए दोस्तों को विदाई दी जिन्होंने मेरी निस्वार्थ भाव से मदद की और मेरी यात्रा को इतना सुखद बनाया। मैंने अलग-अलग स्टेशनों पर तैनात वन रक्षकों को चारा बाँट दिया, और बाला के लिए भी कुछ अतिरिक्त रखा।
बैंगलोर लौटने के बाद तीन महीने बीत गए। फिर हैदराबाद राज्य में कृष्णा नदी के पास एक बाघ ने एक आदमी को मार डाला। तीन महीने बाद बोगरा रेलवे स्टेशन से कुछ मील उत्तर में एक चेंचु (एक प्रकार का बाघ) मारा गया। तब से लेकर अब तक इंसानों की हत्याओं की खबरें बहुत कम और छिटपुट ही आई हैं। लेकिन फिर भी आती रहती हैं।
क्या मेरे द्वारा घायल किया गया आदमखोर आखिरकार ठीक हो गया? क्या उसने फिर से हमले शुरू कर दिए हैं? क्या मेरी यात्रा के समय दो अलग-अलग आदमखोर सक्रिय थे? दिगुवामेटा में महोवा के फूल इकट्ठा कर रही महिला को ले जाने वाला आदमखोर, बाला की पत्नी की हत्या करने वाले से बिल्कुल अलग था?
क्या ये हालिया हत्याएं इन्हीं दो बाघों में से किसी एक का काम थीं—अगर वास्तव में कभी दो बाघ थे भी? या फिर ये किसी दूसरे बाघ ने की थीं, जो हाल ही में सामने आया था?
ये सवाल कभी-कभी मुझे परेशान कर देते हैं, क्योंकि मुझे इनका जवाब नहीं मिल पाता। लेकिन मैं इन्हें जानने के लिए बहुत कुछ कुर्बान करने को तैयार हूँ।

सात

गेडेसल का विशाल बैल बाइसन यह किसी आम शिकार की कहानी नहीं है, जिसमें उस विशालकाय बैल बाइसन को गोली मारकर या घायल करके मार गिराया जाता है जिसके बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ। अगर आप ऐसा सोच रहे हैं, तो आप निराश होंगे, क्योंकि मैंने इस जानवर पर कभी गोली नहीं चलाई, और न ही कभी चलाऊंगा। क्योंकि मैं उसका बहुत सम्मान करता हूँ।
वह एक बहादुर और अनुभवी योद्धा थे, और अगर वह आज भी जीवित हैं तो वह अपने उस झुंड के स्वामी और नेता होने के खिताब के पूरी तरह हकदार हैं जिसकी उन्होंने इतनी निष्ठा से देखभाल की। अगर वह मुझे समझ पाते, तो मुझे उन्हें अपना मित्र कहने पर गर्व होता।
गेदेसाल उत्तरी कोयंबटूर जिले के जंगलों में स्थित एक छोटे से शोलागा गांव का नाम है, जो उस क्षेत्र के शीर्ष पर बसा है जिसे मैं 'बाइसन रेंज' कहता हूं। इसी नाम का एक वन बंगला सड़क के किनारे स्थित है, जब यह सड़क कोललेगल कस्बे से दिंबुम गांव की ओर दक्षिण की ओर जाते हुए चढ़ाई के शीर्ष पर पहुंचती है। गेदेसाल से दिंबुम को अलग करने वाली सात मील की दूरी में से पांच मील तक यह सड़क एक पहाड़ी की ढलान से नीचे जाती है। अंतिम दो मील के लिए यह फिर से ऊपर की ओर चढ़ती है। दिंबुम एक खड़ी ढलान के किनारे पर स्थित है। सड़क दिंबुम से दक्षिण की ओर नीचे के मैदानों तक कई तीखे मोड़ों के साथ तेजी से नीचे उतरती है, जहां से यह सत्यमंगलम नामक बड़े कस्बे तक लगभग समतल मार्ग पर आगे बढ़ती है।
गेदेसाल के पश्चिम में बिलिगिरिरंगन पर्वतमाला की विशाल श्रृंखला स्थित है, जिसकी ढलानें हरे-भरे घास के मैदानों के बीच उभरी हुई चट्टानों का एक मनोरम दृश्य प्रस्तुत करती हैं। पहाड़ियों की घाटियों में और नीचे की ओर बहने वाली असंख्य जलधाराओं के किनारों पर पेड़ों के झुंड और घने जंगल उग आए हैं। इन्हें आमतौर पर 'शोला' या वन के एकांत द्वीप कहा जाता है, जो खुले घास के मैदानों या दुर्गम चट्टानों से घिरे होते हैं।
पूर्व दिशा में पहाड़ियों की एक और श्रृंखला है, जो पश्चिम में स्थित बिलिगिरिरंगन पर्वत श्रृंखला की तुलना में ऊंचाई, आकार और भव्यता में काफी छोटी है। ये नीची पहाड़ियाँ पूरी तरह से जंगल से ढकी हुई हैं, जिनमें मुख्य रूप से दस फीट तक ऊँची बाघ घास उगती है, और इनके बीच हजारों बौने जंगली खजूर के पेड़ फैले हुए हैं। साल के मध्य में इन पेड़ों के झुके हुए तनों के सिरों पर पीले जंगली खजूरों के लंबे गुच्छे लगते हैं—ये सूखे और बेस्वाद फल होते हैं, लेकिन पक्षियों और जानवरों दोनों को ही बहुत पसंद आते हैं।
इस प्रकार, स्थलाकृति, वनस्पति और खजूर के संयोजन से यह क्षेत्र बाइसन, सांभर और भालू के लिए एक पसंदीदा ठिकाना बन जाता है।
पहाड़ों और पहाड़ियों की श्रृंखलाओं के बीच उत्तर से दक्षिण तक एक लंबी घाटी फैली हुई है, और इस घाटी के किनारे-किनारे कोललेगल से दिंबुम जाने वाली सड़क दक्षिण की ओर एकांत में अपना रास्ता बनाती है, जो गेदेसाल बस्ती और उसी नाम के वन बंगले के बीच से होकर गुजरती है।
यह इमारत जंगल में बने बंगले के हिसाब से काफी बड़ी है, और इसके पीछे वन विभाग में काम करने वाले कर्मचारियों के रहने के लिए कई छोटे-छोटे मकान बने हुए हैं। इसके अलावा, इसमें एक बड़ा परिसर भी है, जहाँ जंगली पहाड़ी

गुलाब के कुछ सुंदर पौधे उगते हैं, जिनके फूल गुच्छों में खिलते हैं और छोटे गुलदस्तों जैसे दिखते हैं।
बंगले के ठीक दक्षिण में एक नीचा भूभाग है, जिसमें एक छोटा तालाब और कुछ दलदली ज़मीन है। वहाँ उगने वाली हरी घास की कोमल कोंपलों के कारण—जो आसपास के क्षेत्र में पाई जाने वाली खुरदरी टाइगर घास से बिल्कुल अलग हैं — चित्तीदार हिरणों का एक छोटा झुंड लगभग हमेशा ही वहाँ रहता है। जब मैंने उन्हें आखिरी बार देखा था, तो उनका नेतृत्व एक काफी बड़े नर हिरण द्वारा किया जा रहा था, जिसके सींगों का अच्छा-खासा गुच्छा था, उसके गहरे भूरे कंधे लगभग काले थे, जिन पर सफेद धब्बे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। मुझे उम्मीद है कि किसी भी शिकारी, चाहे वह इंसान हो या जानवर, ने उसे नहीं मारा होगा, और वह अभी भी उस हरे-भरे और ताजगी भरे नम, ठंडे घाटी में अपने झुंड के मुखिया के रूप में विचरण कर रहा होगा - उस जंगल की तरह ही प्रभुत्वशाली और स्वतंत्र, जिससे वह संबंधित है।
सड़क के पूर्व में स्थित पहाड़ियों की निचली श्रृंखला और पश्चिम में पहाड़ों की तलहटी के साथ फैली गहरी घाटी, इस क्षेत्र में रहने वाले बाइसन के कई अलग-अलग झुंडों को चरने के व्यापक अवसर प्रदान करती है। इस घाटी में एक बारहमासी, काफी चौड़ी धारा बहती है, और इसमें मिलने वाली विभिन्न सहायक नदियाँ समय-समय पर सड़क को पार करती हैं। इस प्रकार, भीषण गर्मी के मौसम में भी पानी की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित रहती है, जो इन जानवरों को स्थायी रूप से यहाँ बसे रहने में योगदान देने वाला मुख्य कारक है।
बाइसन के इन झुंडों में बीस से चालीस या इससे भी अधिक बाइसन होते हैं, जिनमें से अधिकांश अलग-अलग उम्र की मादा बाइसन और उनके बच्चे होते हैं, और प्रत्येक झुंड में लगभग आधा दर्जन बड़े आकार के नर बाइसन भी होते हैं। सबसे बूढ़ा और परिपक्व नर बाइसन स्वतः ही अपने युवा प्रतिद्वंद्वियों पर श्रेष्ठता प्राप्त कर लेता है और उस झुंड का स्वामी बन जाता है, जब तक कि कोई युवा और अधिक शक्तिशाली नर उसे पदच्युत न कर दे, या जंगल के नियमों के अनुसार उसकी मृत्यु न हो जाए। कभी-कभी कोई बड़ा नर बाइसन झुंड से अलग होकर अपना एकांत जीवन व्यतीत करता है।
बाइसन 'रिंडरपेस्ट' जैसी बीमारियों से बुरी तरह प्रभावित होते हैं, जो अक्सर शोलागा जनजाति के पालतू मवेशियों के झुंडों को प्रभावित करती हैं, जो जंगल या आसपास के चरागाहों में रहते हैं। मवेशियों को जंगल में चरने के लिए छोड़ा जाता है और वे संक्रमण को बाइसन में फैला देते हैं। अक्सर बाइसन को 'फुट-एंड-माउथ' बीमारी से पीड़ित देखा जाता है, जो मवेशियों के लिए बेहद घातक होती है, या गिद्धों को देखकर किसी ऐसे बाइसन के शव तक पहुंचना आम बात है जो मवेशियों की इस सबसे घातक बीमारी से मर गया हो।
मेरी कहानी में जिस विशाल बैल का ज़िक्र है, वह कम से कम तीस जानवरों के झुंड का सरदार था। मैंने उसे अक्सर सुबह-सुबह देखा है, जब उगते सूरज की रोशनी में ओस की बूँदें चमकती थीं, और कभी-कभी शाम को लगभग 5:30 बजे, 39 वें और 41 वें मील के पत्थरों के बीच सड़क के किनारे चरते हुए। उसकी पहचान उसके मुड़े हुए बाएँ सींग से आसानी से हो जाती थी, जो स्पष्ट रूप से विकृत था और अंदर व आगे की ओर मुड़ा हुआ था।
शायद इस बूढ़े बैल की लंबी उम्र का कारण इसका यह विकृत अंग है, क्योंकि इसकी वजह से इसका सिर किसी भी तरह से ट्रॉफी के लायक नहीं है, हालांकि इसका दाहिना सींग बेहद खूबसूरत है। यह सच है कि कोई शिकारी या अनोखी चीजों का संग्रहकर्ता इसके सिर को एक अनूठे नमूने के रूप में महत्व दे सकता है,

कुछ समय बाद, नवंबर 1953 में, मैं दिंबुम गया था। मेरा गेदेसाल में रुकने का कोई इरादा नहीं था और मैं गाड़ी चला रहा था तभी मेरी नज़र एक अकेले व्यक्ति पर पड़ी जो पैदल चल रहा था। पास आकर मैंने देखा कि वह शोलागा थे, जिनका नाम राचेन था, जिन्हें मैं उस बंगले में डेरा डालते समय हमेशा काम पर रखता था। गाड़ी रोककर और उनका अभिवादन करते हुए मैंने उनसे तमिल में पूछा: 'येन्ना सुंगधी'—जिसका अर्थ है: 'क्या खबर है?'
राचेन ने जवाब दिया कि दो रात पहले ही गाँव वालों ने गाँव से कुछ ही दूरी पर जंगल में एक बाघ और किसी दूसरे जानवर के बीच भयंकर लड़ाई की आवाज़ें सुनी थीं। लड़ाई की तीव्रता और घंटों तक चलने के कारण, उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि बाघ का प्रतिद्वंद्वी जंगली सूअर नहीं हो सकता, क्योंकि मध्यम आकार का एकमात्र जंगली जानवर जो बाघ का मुकाबला करता है, और उन्हें लगा कि यह एक हाथी हो सकता है। लेकिन फिर, अगर यह हाथी होता, तो उन्हें पूरा यकीन था कि उन्होंने उसकी चिंघाड़ और चीखें सुनी होतीं, जो हाथी मुसीबत में होने पर, लड़ते समय या उत्तेजित होने पर हमेशा करता है। रात के बाद के समय में आवाजें धीरे-धीरे कम हो गईं, लेकिन उससे पहले ही उन्होंने बाघ द्वारा मचाए जा रहे तेज शोर से यह अंदाजा लगा लिया था कि वह बुरी तरह घायल हो गया था।
अगली सुबह, जिज्ञासावश शोलागा लोग यह देखने गए कि क्या हुआ था और उन्हें वही दृश्य दिखाई दिया, जहाँ उन्होंने पिछली रात के भीषण संघर्ष के बारे में सुना था। लड़ाकों ने झाड़ियों को उखाड़कर रौंद डाला था, और इस अखाड़े के एक तरफ एक बाघ का शव पड़ा था, जिसे बाइसन ने बार-बार सींगों से घायल करके कुचल दिया था।
इसके बाद शोलागा जनजाति के लोगों ने तुरंत बाघ की खाल उतार ली और उसे गांव ले गए।
दोपहर के करीब मैंने यह कहानी सुनी और समय होने के कारण मैंने खुद उस जगह को देखने का मन बनाया। राचेन को अपने बगल में बैठाकर मैं गेदेसाल गाँव की ओर जाने वाले संकरे रास्ते पर गाड़ी चलाकर गया और देखा कि बाघ की खाल सूखने के लिए ज़मीन पर टांगी हुई थी। कच्ची खाल ऊपर की ओर थी और उस पर सूखी राख की मोटी परत लगी हुई थी, जो शोलागा लोगों के लिए एकमात्र संरक्षक है, क्योंकि वहाँ नमक उपलब्ध नहीं है।
बाघ काफी बड़ा जानवर था, लेकिन उसकी खाल के निचले हिस्से को देखकर लगता था कि बाइसन ने उसे बुरी तरह घायल कर दिया था। शरीर पर कम से कम पाँच अलग-अलग छेद थे जहाँ शक्तिशाली सींगों ने वार किया था, और उनमें से एक, बाईं ओर, यह दर्शाता था कि एक घातक वार ने बाघ के दिल को भेद दिया था।
अब मेरी दिलचस्पी पहले से कहीं ज़्यादा बढ़ गई थी और मैंने उस जगह को देखने की तीव्र इच्छा ज़ाहिर की जहाँ लड़ाई हुई थी। अपनी कार छोड़कर, शोलागा समुदाय के लोगों की भीड़ के साथ मैं निकल पड़ा। आधे मील से भी कम दूरी पर हम घटना स्थल पर पहुँच गए।
इसे ‘अखाड़ा’ कहना ही सबसे सही होगा, क्योंकि सचमुच वहाँ एक भयंकर संघर्ष हुआ था। चारों ओर फैली घास और झाड़ियों पर खून के बड़े-बड़े छींटे पड़े थे, जो प्रतिभागियों के भार से चपटी हो गई थीं और सूखे खून से लाल हो गई थीं। शोलागा जनजाति ने उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ मरा हुआ बाघ पड़ा था।
खून की मात्रा देखकर स्पष्ट था कि बाइसन भी बुरी तरह घायल हो गया था। अचानक ही मैंने सोचा कि अगर संभव हो तो मैं उसका पीछा करके देखूँ कि वह जंगल में कहीं मरा हुआ है या मरणासन्न अवस्था में है। दोनों ही स्थिति में, मुझे

आठ

चोर्डी का अयालदार बाघ
यह एक बहुत बड़े बाघ की कहानी है जिसने उस क्षेत्र में, जहाँ वह रहता था— या यूँ कहें कि उस क्षेत्र के मानव निवासियों के लिए—काफी परेशानी खड़ी की, और जिसका पीछा करना और अंततः उसे पकड़ना बहुत मुश्किल था।
शिकार की कहानियाँ सुनाते समय, कहानीकार का उद्देश्य श्रोताओं की रुचि बनाए रखना होता है। इसके लिए उसे अपने शिकार को मारने में सफल प्रयासों का वर्णन करना पड़ता है। मजबूरीवश उसे कई असफलताओं और निराशाओं को छोड़ना पड़ता है, क्योंकि यदि वह उन सभी का वर्णन करेगा तो श्रोता जल्द ही ऊब जाएंगे। लेकिन केवल सफलताओं का उल्लेख करने से यह धारणा बनती है कि आदमखोर जानवर, चाहे वह बाघ हो या तेंदुआ, को मारने के प्रयास लगभग हमेशा सफल होते हैं, लगभग हमेशा आसान होते हैं, और लगभग हमेशा अपेक्षाकृत कम समय में - अधिक से अधिक कुछ दिनों में - पूरे हो जाते हैं।
वास्तव में, ये तीनों धारणाएँ सत्य से बहुत दूर हैं, और वास्तविक परिस्थितियाँ हमेशा इसके बिल्कुल विपरीत होती हैं। असफलताएँ बहुत अधिक होती हैं और शारीरिक, मानसिक और तंत्रिका संबंधी परिस्थितियाँ अत्यंत कठिन होती हैं; और अक्सर जानवर को सामान्य स्थिति में पहुँचने में महीनों और यहाँ तक कि वर्षों लग जाते हैं। कभी-कभी तो उसे गोली भी नहीं लगती।
तो इस कहानी में मैं एक ऐसे प्रयास के बारे में बताने जा रहा हूँ जो अनायास ही शुरू हुआ और जिसे पूरा होने में लगभग पाँच लंबे और थकाऊ साल लग गए। ज़ाहिर है, यह कोई निरंतर खोज नहीं थी, बल्कि छिटपुट प्रयासों की एक श्रृंखला थी। मेरे प्रयासों के अलावा, बैंगलोर और बॉम्बे के अन्य शिकारी भी थे, और स्थानीय धूर्त लोगों का तो कहना ही क्या, जिन्होंने इस चालाक प्राणी को हराने की कोशिश की। और हम सभी असफल रहे—जब तक कि वे पाँच साल बीत नहीं गए।
उसे 'बालों वाला बाघ' कहा जाता था क्योंकि उसकी गर्दन, कानों के पीछे और गले व ठोड़ी को ढके हुए बालों का एक असाधारण गुच्छा था। स्वाभाविक रूप से बालों के इस गुच्छे के कारण उसका सिर बहुत बड़ा दिखाई देता था, जिसे हमेशा 'इतना बड़ा' बताया जाता था, गवाह अपने हाथों को बगल में फैलाकर, उंगलियों को अंदर की ओर मोड़कर, हालांकि बहुत कम लोगों ने उसे देखा था और उसके बारे में बताने के लिए जीवित बचे थे।
ऐसा माना जाता है कि उसका मूल निवास स्थान चोर्डी के आसपास था, क्योंकि यही उस गांव का नाम था जहां उसे पहली बार देखा गया था और जिसके पास ही उसने पहली बार किसी इंसान की हत्या की थी।
चोर्डी एक छोटा सा गाँव है जो जंगल से घिरा हुआ है और कुम्सी नामक छोटे कस्बे से लगभग चार मील दूर सड़क के किनारे बसा है। कुम्सी स्वयं मैसूर राज्य के शिमोगा जिले की राजधानी से सोलह मील दूर है। शिमोगा बैंगलोर से अच्छी सड़क मार्ग से मात्र 172 मील दूर है। बैंगलोर की ओर वाली सड़क का लगभग सत्तर मील का हिस्सा कंक्रीट का है और बाकी तारकोल का है, इसलिए कुछ खतरनाक और अप्रत्याशित मोड़ों को छोड़कर, वाहन चालक आमतौर पर सुरक्षित रूप से और काफी कम समय में शिमोगा पहुँच सकते हैं।

The Maned Tiger of Chordi

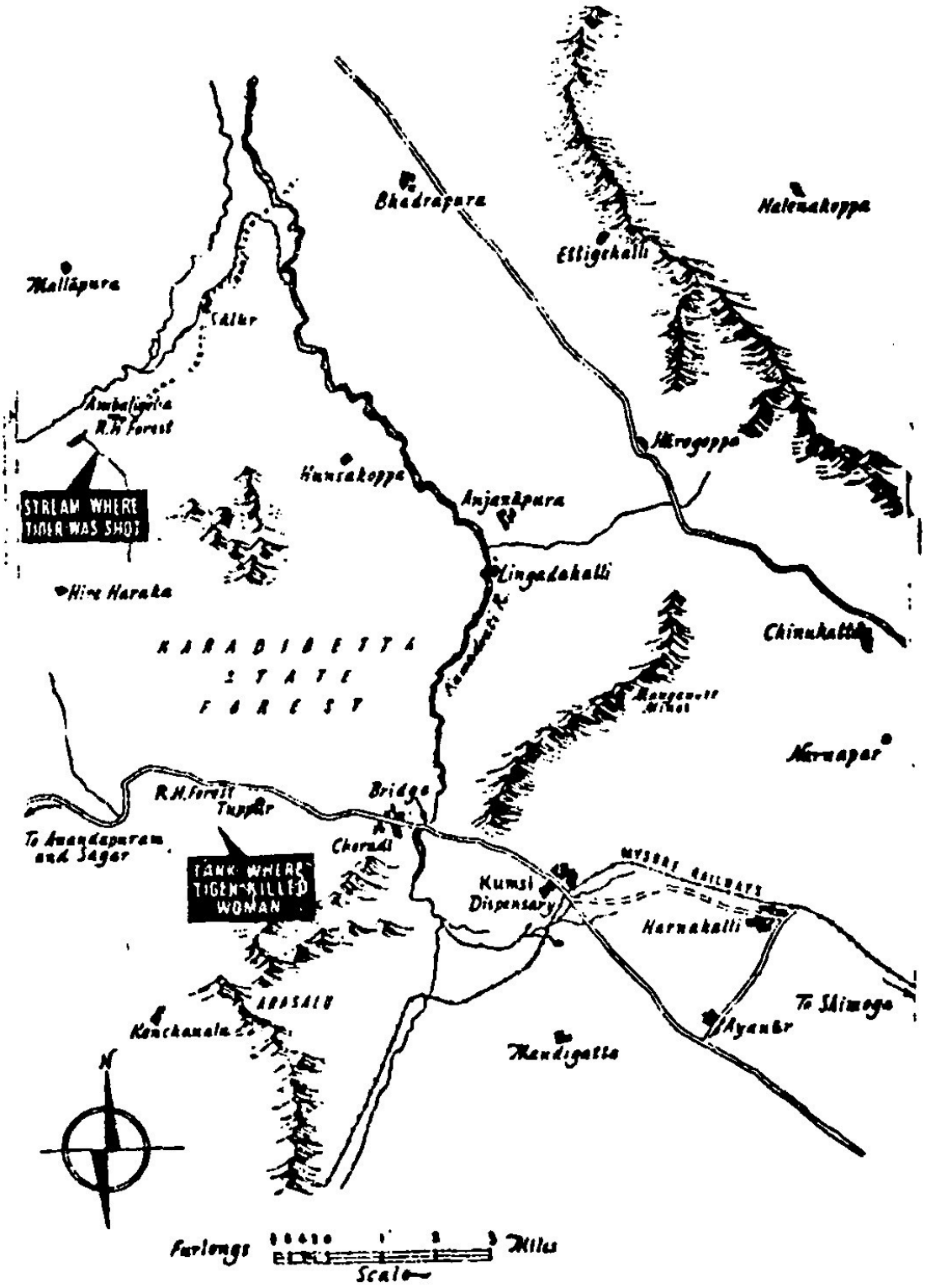

वहां से सड़क कुम्सी और चोर्डी की ओर जाती है, फिर लगभग नौ मील आगे आनंदपुरम गांव, फिर ग्यारह मील आगे सागर शहर और वहां से लगभग सोलह मील आगे, तलगुप्पा नामक एक अन्य गांव से गुजरते हुए, प्रसिद्ध गेरसप्पा जलप्रपात तक जाती है, जिसे कभी-कभी जोग जलप्रपात के नाम से भी जाना जाता है, जहां शरावती नदी का जल चार अलग-अलग झरनों में 950 फीट की ऊंचाई से गिरता है। यह एक अविस्मरणीय दृश्य है और ऐसा दृश्य है जो सबसे निर्मम और भौतिकवादी लोगों के हृदयों में भी विस्मय और श्रद्धा की भावना जगाता है।
जलप्रपात के शीर्ष पर दो घुमंतू बंगले हैं। शरावती नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित बंगला, जो कि कहीं अधिक आधुनिक इमारत है, मैसूर राज्य की सीमा में आता है और इसे 'मैसूर बंगला' कहा जाता है। नदी के दूसरी ओर, उत्तरी किनारे पर स्थित दूसरा बंगला बॉम्बे राज्य के अधिकार क्षेत्र में आता है। यह एक पुरानी इमारत है, जो बेहद एकांत में स्थित है और इसमें बहुत कम लोग रहते हैं—इसी कारण मैं इसे अधिक पसंद करता हूँ। इसे, ज़ाहिर है, 'बॉम्बे बंगला' के नाम से जाना जाता है।
दोनों बंगलों में समय-समय पर ठहरने वाले विभिन्न लोगों की कविता-रचनाओं से भरी हुई विज़िटर बुक मिलना काफी असामान्य और मनोरंजक है। निस्संदेह, झरनों की भव्यता ने उन लोगों के मन में छिपी हुई काव्यात्मक इच्छा को जगा दिया है जो शायद अब तक उदासीन रहे थे। उनकी कुछ रचनाएँ वास्तव में सराहनीय और प्रेरणादायक हैं; लेकिन बाकी के लिए मुझे लगता है कि कहीं और इतनी बेतुकी रचनाओं का संग्रह करना मुश्किल होगा।
बाघ की हिंसक हरकतें आदमखोरों के जीवन की सामान्य घटनाओं से काफी मिलती- जुलती थीं। जंगल में रहने वाले प्राकृतिक जंगली जानवरों का शिकार करने से लेकर, वह धीरे-धीरे मवेशी चोर बन गया, जिसका कारण निस्संदेह शिमोगा जिले के आरक्षित जंगलों में चरने वाली हजारों मोटी गायों की मौजूदगी थी। अन्य जंगली जानवरों पर चुपके से हमला करने की कठिनाइयों के विपरीत, इन गायों की मौजूदगी और आसानी से उनका पीछा करके उन्हें मार गिराने की क्षमता ने उसे एक हानिरहित शिकारी से चोर्डी के आसपास के चरवाहों के लिए एक बेहद विनाशकारी खतरा बना दिया।
एक के बाद एक हमले होते रहे और बाघों द्वारा मवेशियों को मार डाला गया, अंततः रखवालों की सामान्य सुस्ती इतनी बढ़ गई कि उन्होंने कुछ करने का फैसला किया। मामला तब और बिगड़ गया जब एक साहसी पशुपालक अपने पशुओं को चराने के लिए जंगल में ले जाते समय अपने साथ भरी हुई बंदूक ले गया, जबकि वन विभाग के नियमों के अनुसार बिना शिकार लाइसेंस के हथियार लेकर अभ्यारण्य में प्रवेश करना उसके लिए गैरकानूनी था।
हालांकि, उसने ठीक वैसा ही किया, और संयोगवश, उसी दिन अयालदार बाघ ने उस पर हमला कर उसके एक जानवर को मार गिराया। पेड़ के तने के पीछे छिपकर उसने अपनी बंदूक से गोलियां चलाईं, और एल.जी. छर्रों से बाघ के दाहिने हिस्से में गंभीर चोट आई। वह कुछ समय के लिए चोर्डी के आसपास से गायब हो गया, और सभी पशुपालक बंदूक के मालिक के आभारी थे कि उन्होंने उन्हें इस खतरे से छुटकारा दिलाया।
फिर कुछ मील दूर, आनंदपुरम की सीमा से लगे झाड़ीदार जंगल में वह अयालदार जानवर फिर से प्रकट हुआ। लेकिन वह अब भी अभ्यारण्य में चर रहे मवेशियों पर हमला करने की अपनी आदत पर अड़ा हुआ था। वह अभी तक बिगड़ा नहीं था—अभी तक आदमखोर नहीं बना था—क्योंकि उसके बगल में लगे घाव ने उसे किसी भी तरह से अक्षम नहीं किया था।

गया। आखिरकार, वे वहाँ पहुँच गए और उन्होंने उसे, या यूँ कहें कि उसके बचे हुए अवशेषों को ढूंढ लिया।
यह शुरुआत थी, और उसके बाद मानव पीड़ितों का सिलसिला शुरू हुआ, जिनकी मौतें शरावती नदी के उस पार जोग जलप्रपात के पास बॉम्बे बंगले की ओर जाने वाली सड़क तक हुईं।
सरकारी कामकाज धीमी गति से चलता है, और इन क्षेत्रों में आरक्षित जंगलों को इस जानवर के शिकार के लिए जनता के लिए खोलने में काफी समय लग गया।
कई उत्साही लोग वहां पहुंचे और उनमें बॉम्बे प्रेसीडेंसी के भी काफी प्रतिनिधि मौजूद थे। उन्होंने पूरी लगन और मेहनत से प्रयास किया, लेकिन भाग्य ने उनका साथ नहीं दिया। यह बाघ जीवित चारे के रूप में बांधे गए मवेशियों और भैंसों से आकर्षित नहीं हुआ। इसी बीच, मानव हत्याएं जारी रहीं।
मेरे एक मित्र जैक हॉटन, जिन्हें उनके लगभग छह फुट चार इंच लंबे और उसी अनुपात में चौड़े शरीर के कारण 'लॉफ्टी' उपनाम से जाना जाता था, ने इस जानवर का शिकार करने का फैसला किया और मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा। जहाँ तक मुझे याद है, यह यात्रा बाघ के आदमखोर बनने के लगभग एक साल बाद की गई थी। कुछ इस तरह हुआ कि किसी कारणवश—संभवतः इसलिए कि मैं अपनी बची हुई छुट्टी का उपयोग कर चुका था—मैं उनके साथ केवल एक सप्ताह के लिए गया, और उनसे कहा कि मुझे उस समय के बाद वापस लौटना होगा। हमने उनकी 1931 मॉडल की फोर्ड कार में यात्रा की, और यह तय हुआ कि सप्ताह समाप्त होने के बाद मैं ट्रेन से बैंगलोर लौट जाऊंगा, जबकि वे लगभग पूरे एक महीने तक वहीं रहेंगे।
हम बैंगलोर से शिमोगा के लिए कार से रवाना हुए और वहां आधे दिन के लिए रुके ताकि सागर वन रेंज के जिला वन अधिकारी से मिल सकें, जहां ये हत्याएं हो रही थीं, ताकि उन विभिन्न स्थानों के नाम और उन हमलों की सटीक तारीखों का पता लगाया जा सके जहां लोगों पर हमले हुए थे, ताकि हमलों के क्रम का अध्ययन करके, यदि संभव हो तो, इस बाघ द्वारा अपनाए जा रहे सटीक क्षेत्र का पता लगाया जा सके।
मैंने पहले ही समझाया है कि आदमखोर बाघ आमतौर पर एक निश्चित मार्ग या यात्रा कार्यक्रम का अनुसरण करते हैं। मानचित्र पर उन गांवों या इलाकों के नाम और प्रत्येक घटना की तारीख नोट करके, जहां वे शिकार करते हैं, अक्सर स्वयं ही उनके क्षेत्र का पता लगाना और यह अनुमान लगाना संभव होता है कि बाघ किस दिशा या क्षेत्र में हो सकता है, जब आप उसे पकड़ने का प्रयास करेंगे।
मानचित्र पर घटनाओं के हमारे अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से पता चला कि यह बाघ सड़क के किनारे से कुछ मील की दूरी के भीतर ही रहा और कुम्सी और शरावती नदी के दूसरे किनारे के बीच, बॉम्बे बंगले तक, ऊपर-नीचे घूमता रहा।
यह एक बेहद घना जंगल वाला इलाका है जिसमें कई बिखरे हुए गाँव हैं, जिनके निवासी लगभग पूरी तरह से मवेशियों के बड़े झुंड चराने में लगे हुए हैं। इन इलाकों में हर महीने बड़ी संख्या में बाघ और तेंदुओं द्वारा इन जानवरों को मार डाला जाता है, इसलिए इस तथ्य के कारण यह पता लगाना मुश्किल हो गया कि क्या हमारा आदमखोर जानवर मवेशियों को भी मारता था या नहीं। हमें लगभग यकीन था कि वह ऐसा करता था, क्योंकि इंसानों का शिकार बहुत कम और अनियमित था, जिससे यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वह केवल इंसानी मांस खाकर ही जीवित रह सकता था। हमारी राय स्थानीय लोगों की राय से बिल्कुल विपरीत थी, जिनका मानना था कि वह किसी भी पालतू जानवर को हाथ नहीं लगाता था।

देखा। ‘मैं अयाल के बारे में पूरी तरह भूल गया था,’ उसने स्वीकार किया। ‘मैंने गलत बाघ को गोली मार दी। तुम्हें तो पहले से ही पता था?’
‘हाँ, लॉफ्टी, मुझे पता था,’ मैंने स्वीकार किया। ‘लेकिन आज सुबह जब मैं तुमसे मिला और तुमने मुझे बताया कि तुमने आदमखोर बाघ को मार गिराया है, तो तुम इतने खुश थे कि मेरा तुम्हें निराश करने का मन ही नहीं हुआ। मैंने सबसे पहले उसकी गर्दन के बाल देखे। ज़ाहिर है, गोली चलाने के अलावा तुम्हारे पास कोई चारा नहीं था।’ और फिर, अपनी बात को और ज़्यादा विश्वसनीय बनाने के लिए, मैंने जल्दी से कहा: ‘आखिरकार, बाघ तो अँधेरे में आया था, और तुम टॉर्च की रोशनी में भी उसकी गर्दन के बाल नहीं देख सकते थे। खैर, यह एक शानदार नमूना है और गर्व करने लायक ट्रॉफी है; तो खुश हो जाओ, दोस्त।’
लेकिन लॉफ्टी इतनी आसानी से शांत नहीं हुआ। हम तुप्पुर गए, जहाँ मैंने उसे इतना निराश पाया कि बाघ की खाल उतारने के काम की निगरानी में उसकी ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी, और उसने यह काम पूरी तरह से मुझ पर छोड़ दिया। मैं काम करने वाले लोगों को देखता रहा जबकि लॉफ्टी एक कुर्सी पर उदास बैठा रहा। मैंने कई बार उसका ध्यान जानवर के बड़े-बड़े दांतों और पंजों, उसके गहरे निशानों और अन्य विशेषताओं की ओर दिलाकर उसे खुश करने की कोशिश की, लेकिन उसे ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी और उसने बातचीत में शामिल होने से इनकार कर दिया। उसने बस इतना कहा: 'अगर मुझे पता होता कि यह आदमखोर बाघ नहीं है तो मैं इस बेचारे जानवर को गोली नहीं मारता।'
दिन बीतने के साथ-साथ लोफ्टी का उदास मन और भी गहरा होता गया, बजाय इसके कि वह अपनी निराशा को दूर कर पाए। फिर उसने घोषणा की कि यदि अगली सुबह तक कोई हत्या नहीं हुई, तो वह बैंगलोर लौटना चाहेगा।
अगले दिन हम सुबह जल्दी उठ गए, लेकिन हमारे जाल में फँसे तीनों भैंसें बिल्कुल सुरक्षित थीं। इसलिए, हमने पहले से तय समझौते के अनुसार उन्हें उनके पुराने मालिकों को वापस बेच दिया, लगभग उस कीमत के एक चौथाई दाम पर जो लॉफ्टी ने उनके लिए चुकाई थी। फिर हम शिकारगाह के जोग छोर पर गए, लेकिन वहाँ भी दोनों भैंसें जीवित थीं। हमने उनके मालिकों के साथ वही सौदा किया जो हमने तुप्पुर में किया था, और देर दोपहर हम 'ए' मॉडल गाड़ी में बैठकर बैंगलोर वापस आ गए।
इसके कुछ समय बाद तक मुझे इस बाघ के बारे में कोई खबर नहीं मिली। मुझे लगता है कि एक साल से भी अधिक समय बाद मैंने अखबारों में पढ़ा कि कुम्सी कस्बे के काफी पास और लगभग सड़क किनारे एक कोयला जलाने वाले को बाघ ने मार डाला और पूरा खा लिया था।
इसलिए मैंने शिमोगा के जिला वन अधिकारी (डीएफओ) को पत्र लिखकर उनसे अनुरोध किया कि यदि संभव हो तो भविष्य में होने वाले शिकारों के बारे में मुझे टेलीग्राम द्वारा सूचित करते रहें।
शिमोगा जिले के जंगल, मैसूर राज्य के दक्षिण-पश्चिम और मद्रास एवं चित्तूर जिलों के जंगलों के विपरीत, घनी आबादी वाले गांवों और बस्तियों से भरे हुए हैं, और इनमें व्यापक रूप से खेती होती है, विशेष रूप से धान के खेत फैले हुए हैं। सड़कें भी वाहनों और पैदल यात्रियों द्वारा अत्यधिक उपयोग की जाती हैं। इन सब कारणों से, बाघ न केवल कहीं भी हो सकता है और उसे ढूंढना मुश्किल होता है, बल्कि उसका पीछा करना शिकारी के व्यक्तिगत कौशल पर निर्भर करता है। यह एक विचित्र तथ्य है कि भारत के अन्य जंगलों के विपरीत, इस क्षेत्र में कोई आदिवासी वन जनजाति निवास नहीं करती है। जंगलों में जाने वाले एकमात्र लोग मलयाली मूल के कुली हैं, जिन्हें भारत के पश्चिमी

काफी अधिक था और बीच के तीन दिनों में सड़क पर आने-जाने वाली कई बसों, ट्रकों, निजी कारों और बैलगाड़ियों के पहियों के नीचे दबकर खून के सभी निशान मिट गए थे।
अभयारण्य सड़क से कुछ ही गज की दूरी पर सागौन के वृक्षारोपण के रूप में शुरू होता है। उस समय वृक्षों की ऊँचाई लगभग एक समान थी, लगभग बीस फीट, जिन्हें मैसूर वन विभाग द्वारा लगभग दस से पंद्रह वर्ष पहले सीधी पंक्तियों में लगाया गया था। वृक्षारोपण अभयारण्य में लगभग दो फर्लांग तक घना फैला हुआ था, जिसके बाद यह अचानक प्राकृतिक जंगल में विलीन हो जाता था। सागौन के पेड़ों के नीचे घायल जानवर के खून के निशान ढूंढना लगभग नामुमकिन है। ज़मीन पर गिरे और सूखे पत्ते बिछे हैं, जिन पर कोई निशान नहीं बनता। इस मामले में, आदमखोर जानवर जिस लड़के को ले गया था, उसका खून बहुत कम बहा था। हालांकि लकड़हारों ने वह जगह बता दी थी जहां जानवर और उसका शिकार गायब हुए थे, लेकिन हमने काफी खोजबीन के बाद भी सिर्फ तीन जगहें ढूंढीं जहां सागौन के पत्तों पर खून की बूंदें गिरी थीं। आगे खोजबीन में समय बर्बाद करना उचित नहीं था।
मुझे पता था कि अभयारण्य उत्तर की ओर एक धारा और बैलगाड़ी के रास्ते तक फैला हुआ है, जो पश्चिम में गौजा गाँव को पूर्व में अमलीगोला नामक दूसरे गाँव से जोड़ता है। बैलगाड़ी का रास्ता और धारा अभयारण्य की उत्तरी सीमाएँ बनाते हैं, हालाँकि जंगल कई मील तक फैला हुआ था। एक समझदारी भरा उपाय यह प्रतीत हुआ कि अभयारण्य की चारों सीमाओं पर चार जीवित शिकार बाँध दिए जाएँ, और एक शिकार केंद्र में बाँध दिया जाए, क्योंकि मुझे इस पवित्र क्षेत्र में इस बाघ का शिकार करने की विशेष अनुमति प्राप्त थी, यदि आवश्यकता पड़ी तो।
मैंने दोनों रेंज अधिकारियों (आर.ओ.) से कहा कि मुझे इन पाँच चारे की व्यवस्था करने में उनके सहयोग की आवश्यकता होगी, क्योंकि इस क्षेत्र में पिछले अनुभव के आधार पर मुझे संदेह था कि क्या मैं पाँच जानवर भी प्राप्त कर पाऊँगा, क्योंकि लोग मवेशियों की बलि देने का विरोध करते थे और सहयोग नहीं करते थे। उन्होंने मुझे चिंता न करने को कहा और बताया कि वे अगले दिन सुबह नौ बजे तक चारा मेरे पास भेज देंगे।
कुम्सी में एक वन लॉज है—वही लॉज जहाँ बाघ के हमले में घायल हुए रेवरेंड जर्विस का हाथ काटने के लिए आपातकालीन ऑपरेशन किया गया था। मैंने इसी बंगले में डेरा डालने का फैसला किया और कुम्सी के पशु चिकित्सक से अनुरोध किया कि वे मुझे चारा दिखा दें, इससे पहले कि वे उसे चोर्डी ले जाकर अन्य चारे में मिला दें, जिसे चोर्डी में उनके समकक्ष ने लाने का जिम्मा लिया था। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैं अपने द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले जीवित चारे के बारे में काफी सतर्क रहता हूँ। बहुत बीमार या बूढ़े मवेशी, जो मौत के कगार पर होते हैं, अक्सर साहब को चारे के रूप में सौंप दिए जाते हैं। फिर वे आश्चर्य करते हैं कि बाघ उन्हें आसानी से क्यों नहीं मार देता। लेकिन बाघ एक शिकारी और सज्जन होता है, साहब की तरह, वह सियार नहीं होता जो हड्डियों के एक बीमार ढेर से संतुष्ट हो जाए।
जब मैं चारे के बारे में बात कर रहा था, तब मेरे साथी बहुत बेचैन हो रहे थे, क्योंकि शाम के छह बज चुके थे और रात का अंधेरा छाने लगा था। हालाँकि, मैं ज़्यादा घबराया हुआ नहीं था, क्योंकि मुझे पता था कि जब तक हम पाँचों साथ रहेंगे, हम सुरक्षित रहेंगे। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि हम घने सागौन के बागान से होते हुए एक साथ मिलकर आगे बढ़े और सड़क पर खड़ी कार तक पहुँच

वह अचानक रुक गया और पीछे मुड़ गया। उसका चेहरा दाईं ओर था, इसलिए मुझे उसकी दाहिनी कंधे के पीछे गोली मारनी पड़ी। वह हवा में उछला और पीछे की ओर गिर गया। मैंने दूसरी और तीसरी बार गोली चलाई।
फिर उसे मेरी मौजूदगी का एहसास हुआ और वह ढलान पर फिसलते-लड़खड़ाते हुए मेरी ओर बढ़ा। महज पाँच गज की दूरी से मेरी चौथी गोली उसके सिर को भेद गई। बाद में, जब मैंने उसकी जांच की, तो मैं उसकी गर्दन के चारों ओर उगने वाले बालों के असामान्य गुच्छे को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। यह एक नियमित अयाल का रूप ले रहा था।
जंगल के कुछ रहस्य कभी सुलझ नहीं सकते, और उनमें से एक यह है कि इस बाघ के सिर पर बाल (अयाल) क्यों थे।

* नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रोग (एलन एंड अनविन, लंदन) देखें।

नौ

पेगेपलयम का आदमखोर यह आदमखोर बाघ के कारनामों और पतन की पूरी कहानी नहीं है, क्योंकि जिस बाघ के बारे में मैं लिख रहा हूँ वह इस समय जीवित है। आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार उसने चौदह लोगों को मारकर खाया था, हालांकि अनौपचारिक रूप से उसके शिकारों की संख्या सैंतीस बताई जाती है, जिनमें पुरुष, महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। इस अनौपचारिक अनुमान में से लगभग आधे लोगों को वास्तव में पूरी तरह या आंशिक रूप से खा लिया गया था, शेष को जानवर के पंजों से केवल घायल किया गया था। आधिकारिक रिकॉर्ड में केवल मारे गए और खाए गए व्यक्तियों को ही गिना जाता है, घायलों को नहीं। इसी कारण आधिकारिक और अनौपचारिक मृत्यु- सूचनाओं में अंतर है।
मैं जो कहानी सुनाने जा रहा हूँ, उसकी दिलचस्प बात यह है कि मेरा मानना है कि यह बाघ वही जानवर है जिसका वर्णन मैंने अपनी पिछली पुस्तक में 'राजनगर का हमलावर'* नामक कहानी में किया था। जब मैं वह वृत्तांत लिख रहा था, तब एक बाघ ने उत्तरी कोयंबटूर जिले में, डिंबम ढलान की तलहटी में, पहाड़ी पठार की तलहटी से सटे झाड़ीदार जंगल में, और उत्तर में डिंबम (पहाड़ी पर खड़ी घाट सड़क के शीर्ष पर) और दक्षिण में तलहटी में शुष्क मैदानों पर स्थित सत्यमंगलम शहर के लगभग मध्य में अपना निवास स्थान बना लिया था। पहाड़ियों की तलहटी में स्थित झाड़ियों वाले घने जंगलों के सबसे नज़दीकी गाँव का नाम राजनगर है। जब से इस बाघ ने इस गाँव के चरवाहों को सताना शुरू किया, जो अपने मवेशियों को इन झाड़ियों वाले जंगलों में चराने ले जाते थे, तब से वह राजनगर के बाघ के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसके अलावा, हमले के अपने अनोखे तरीके के कारण उसने विशेष ख्याति अर्जित की—या कम से कम जब मैंने वह कहानी लिखी थी, तब तो यही माना जाता था। यह अनोखा तरीका यह था कि वह झाड़ियों से निकलकर अचानक हमला करता और अपने पंजों से खरोंचकर चरवाहे को बुरी तरह घायल कर देता, और फिर हमले के दौरान आसपास घूम रहे मवेशियों के झुंड में से हमेशा अपने लिए एक मवेशी चुनकर ले जाता। उस समय तक उसके द्वारा हमला किए गए किसी भी इंसान को काटने का कोई पुख्ता सबूत नहीं था। एक-दो लोगों के लापता होने की सूचना मिली थी और यह माना जाता था कि बाघ उन्हें खा गया था, लेकिन इस अनुमान की पुष्टि करने वाला कोई ठोस सबूत नहीं था। इतना तो पता था कि यह बाघ अपने शिकार को काटने के बजाय अपने पंजों से घायल करता था।
इस विचित्र आदत के कारण यह आम धारणा बन गई कि वह एक ऐसा जानवर था जिसके चेहरे या जबड़े पर इस तरह की चोट लगी थी कि वह काट नहीं सकता था। साथ ही, यह भी पाया गया कि वह चरवाहे पर हमला करने के बाद जिन मवेशियों को मारता था, उन्हें वह बड़े चाव से खाता था, जिससे यह साबित होता था कि जब उसका मन करता था तो वह अच्छी तरह से काट और खा सकता था। कुल मिलाकर, यह एक अत्यंत असामान्य और विचित्र मामला था, जिसकी आज तक संतोषजनक व्याख्या या प्रमाण नहीं मिल पाया है, हालांकि इस आदत के लिए कई तरह के तर्क दिए गए हैं। मैंने बताया है कि मैंने इस बाघ को गोली मारने की कोशिश कैसे की और कैसे मैं असफल रहा। वह एक बेहद मायावी जानवर था। आखिरकार मैं बेंगलुरु में अपने घर लौट आया, और 'राजनगर के खूंखार बाघ' को हमारी मुठभेड़ के पहले दौर का निर्विवाद विजेता बना दिया। मुझे पूरा विश्वास था कि वह समय जरूर आएगा जब

Anderson, more famous for hunting man-eating tigers, finds in a wily panther a real challenger to his hunting acumen. There are thrills, failures, disappointments, and at long last, the elusive success. He tells the real-life adventure story set in the deep jungle, with snakes, bisons and of course tigers, with unique verve and colour which only he is capable of.

Kenneth Anderson (1910-74) hailed from a Scottish family settled in India for six generations. His love for the denizens of Indian jungle led him to big game hunting and eventually to writing real-life adventure stories. His book are hailed as classics of jungle lore.